समाज विकास

मूल्य : १० रुपये, वार्षिक : १०० रुपये

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

1935-2010

▸ दिसम्बर २०१० ▸ वर्ष ६० ▸ अंक १२

लोकसभाध्यक्ष मीरा कुमार से मिला सम्मेलन का प्रतिनिधिमण्डल

लोकसभाध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार का स्वागत करते राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा, राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री संजय हरलालका।

76वें स्थापना दिवस पर हुई संगोष्ठी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के 76वें स्थापना दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में सम्मेलन अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा, पूर्व अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान, राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री संजय हरलालका, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया, समाजसेवी सांवरमल भीमसरिया , संयोजक कैलाशपति तोदी।

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

समाज विकास

◆दिसम्बर 2010 ◆वर्ष 60 ◆अंक-12 ◆एक प्रति-10 रु. ◆वार्षिक-100 रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के 22वें राष्ट्रीय अधिवेशन की सूचना	४
चिट्ठी आई है	५
अपनी बात : इस दिवालियेपन का क्या इलाज ? –शंभु चौधरी	६
अध्यक्षीय : रिश्तों की परम्परा	७
नये संकल्प ही नये प्रकल्प निर्मित करेंगे – रामअवतार पोद्दार	८
लोकसभाध्यक्ष मीरा कुमार से मिला अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन का प्रतिनिधिमण्डल	१२
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति बैठक की संक्षिप्त रिपोर्ट	१३
कविता : पथिक – जय कुमार रुसवा	१४
चौंदह मंत्र	१४
धरोहर (१) – श्री अग्रसेन स्मृति भवन	१५
धरोहर (२) – हरिचरण मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय का संक्षिप्त इतिहास	१७
धरोहर (३) – सनेहीराम डूंगरमल लोहिया परिवार के प्रमुख सार्वजनिक कार्यों की सूची	१८
राजस्थानी गप्प – मनोहरलाल गोयल	२३
बिरला दम्पति श्री बसन्तकुमार बिरला एवं डॉ. सरला बिरला को राष्ट्रीय शिखर प्रतिभा सम्मान	२३
यात्रा संस्मरण – प्रेषक : राम अवतार खेतान	२४
सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार एवं भंवरमल सिंघी समाजसेवा पुरस्कार हेतु बैठक	२४
भागलपुर नगर में राजस्थानी समाज द्वारा स्थापित एवं संचालित संस्थायें	२५
संगठन का मूल उद्देश्य : एकता – सीताराम बाजोरिया	२७
कविता : अपनों को ही डुबोने आ जाते हैं लोग – बाल कृष्ण गोयल	२८
कविता : कब तक ? – युगल किशोर चौधरी, संत वचन	२८
तलाक/दहेज हत्या (आई.पी.सी. धारा 498/ए) – राधेश्याम अग्रवाल	२९
लधुकथा : छेद – मुकेश अग्रवाल	३०
कविता : (१) अर्थ का अर्थ – प्रेमलता खण्डेलवाल, (२) कुछ लोग अँधेरों को सिमटने नहीं देते – जमुना प्र. उपाध्याय	३१
कविता : (१) बकरी भाग्य विधाता – राकेश रंजन, (२) मैं मैं हूँ – विजया शर्मा	३२
उ. प्र. प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दीपावली मिलन व अधिष्ठापन समारोह	
उद्योग बढ़ाकर बेरोजगारी भगाये मारवाड़ी समाज – केन्द्रीय कोयला राज्य मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल	३३
मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन	
राजस्थान महोत्सव का विशाल मेला	३३
सम्मेलन के नये सदस्यों की सूची	३४
महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी युवा मंच	
मारवाड़ी समाज गरीबों को मदद करने के लिए हमेशा आगे – गोपानाथ मुंडे	३५
कविता : (१) युवक-आह्वान, (२) कूड़ा- नरेन्द्र जैन	३६
कविता : नयनों की मुनहार – धर्मपाल प्रेमराजका, मन का सन्तुलन बनाये रखना जीवन की उपयोगिता	३७

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ 152बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता – 700007
फोन : 033-2268 0319 ◆ email-samajvikas@gmail.com
के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
ऐभल प्रिंटर्स.लि., 45बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता – 700009 से मुद्रित
◆ **संपादक : नंदकिशोर जालान, ◆ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी**

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

२२वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

२९-३० जनवरी २०११, पटना (बिहार)

-: अधिवेशन स्थल :-

बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स हॉल

खेमचन्द चौधरी मार्ग, गांधी मैदान, आईकन ट्रेडर्स
२०५, शांति विहार, फ्रेजर रोड, पटना - ८००००१

-: आतिथ्य :-

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

न्यू डाक बंगला रोड, पटना - ८००००१

अध्यक्षता करेंगे

श्री नन्दलाल रुँगटा

राष्ट्रीय सभापति

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

इस अवसर पर निर्वाचित सभापति **श्री हरिप्रसाद कानोड़िया** पदभार ग्रहण करेंगे।

आप सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक :

कमल नोपानी
प्रांतीय अध्यक्ष
राजेश सिकरिया
प्रांतीय महामंत्री
दशरथ कुमार गुप्ता
स्वागताध्यक्ष
बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

रामअवतार पोद्दार
राष्ट्रीय महामंत्री
आत्माराम सोंथलिया
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
ओम प्रकाश पोद्दार, संजय हरलालका
राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

चिट्ठी आई है :

समाज सुधार आन्दोलन

समाज विकास का कौस्तुभ जयन्ती विशेषांक दो महीना पश्चात मिला। पत्रिका में पुराने दस्तावेजों के प्रकाशन का कार्य महत्वपूर्ण रहा। समाज सुधार आन्दोलन विषय की जानकारियां पृष्ठ ५६ एवं ६७ में छपी हैं जिन्हें देखा। एक आवश्यक जानकारी सम्मेलन कार्यालय में नहीं मिली। एक प्रत्यक्ष द्रष्टा होने के नाते आपको देना उचित समझता हूँ। पृष्ठ ६७ में छपी सूचना के साथ इसे जोड़ने से पाठकों के लिये यह अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

जिन शादियों में चार दिन व्यापी जो प्रदर्शन किया गया था, उन सभी प्रदर्शनों में श्री भंवरमल सिंघी के साथ मैं भी शामिल हुआ था। इसके अलावा कई सम्पन्न घरानों वालों के विवाह होने वाला था ऐसे दर्जनों बन्धुओं के यहां, विवाह के पूर्व केवल मैं और श्री सिंघी जी मिलने गये एवं उन्हें रोशनी, सजावट आदि में सादगी बरतने का आह्वान किया तथा मिठाइयों को सीमा के अन्दर रखने का आग्रह किया। कई लोग हमारी बात से राजी हो गये।

– मोहनलाल चोखानी
नागपुर–440001

प्रगति के नये शिखरों

समाज विकास का
कौस्तुभ जयन्ती समारोह अंक आया
मन मयूर हर्षाया
महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील ने
अपने उद्‌गारों से समाज का मान बढ़ाया
सम्मेलन सदैव बढ़ता रहे
प्रगति के नये शिखरों पर चढ़ता रहे
बनती रहे नई तस्वीर हमारी
सबों को शुभकानायें ढेर सारी।

– युगल किशोर चौधरी
चनपटिया, प. चम्पारन, बिहार

Sri Ram Awatar Poddar,

I have the pleasure to inform you that we have returned from nagpur attending the meeting on 21st of november 2010. Looking to the arrangement, made at Nagpur, we convey our heartfelt 'THANKS' to your goodself and your tram of workers, who have helped you to make such a grand arrangement. Our stay at HOTEL and sumptuous breakfast, launch & dinner at meeting place as well as at Rajasthani Bassa/hotel is nice one. The Nagpur meeting will be a memorable in my life.

Mr. Suraj Bhan Jain
Secretary : Marwari Panchayt
P.O. Bhawanipatna-766001,
Dist.Kalahandi (Orissa)

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर श्री हरिप्रसाद जी कानोड़िया का निर्विरोध निर्वाचन हम सबके लिये असीम हर्ष एवं गौरव की बात है। इनके जैसे मृदुभाषी, मिलनसार एवं दृढ़विश्वास आदि गुणों से अनुप्राणित विशिष्ट व्यक्तित्व के निर्विरोध मनोनयन से पद की गरिमा एवं प्रतिष्ठा निश्चित रूप से बढ़ेगी।

श्रद्धेय श्री कानोड़िया जी के कंधों पर मारवाड़ी समाज के उत्थान एवं उन्नयन की महत्ती जिम्मेदारी है। हमें विश्वास है कि आप सकारात्मक दृष्टिकोण और संगठन को साथ लेकर पूरी तन्मयता से चहुँमुखी विकास के लिये प्रयत्नशील रहकर सुन्दर एवं सुव्यवस्थित समाज की संरचना में सहायक बनेंगे। आप मानव सेवा को अपना कर्त्तव्य मानते हुए सबके प्रति समता भाव रखते हुए जन जागरण के साथ उत्साह एवं आनन्द का संचार कर सामाजिक स्तर पर संतोष एवं शांति का वातावरण निर्मित करेंगे।

हमें पूर्ण आशा है कि इनके कार्यकाल में स्वस्थ सोच के साथ समाज सुधार, समरसता व एकता स्थापित होगी एवं राष्ट्र की प्रगति में अग्रिम भूमिका का निर्वहन करने से इस संस्था की विशिष्ट पहचान बनेगी।

श्री कानोड़िया जी के इस गरिमामयी पद पर आसीन होने से युवा वर्ग में सक्रियता एवं नव ऊर्जा का संचार होगा।

–मनोज कुमार जैन
प्रमंडलीय मंत्री, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
जैन कटरा, कलाली गली, भागलपुर (बिहार)

Respected Sh. Nand Lal Ji Rungta

I realy feel proud to express my sincere thanks and goodwishes to you for the sincerity with which you have led the Sammelen very skillfully during your tenure as president of the sammelen.

As a matter of fact the sammelen has touched the new hights under your kind leadership and I am fully assured that your devotion and services will always be a guiding factor for the members of the sammelen.

I will be failing in my duty if I don' t mention the sincere efforts and guidence of your prediessors who have spread no stone unturned and served selflesly which proved an asset for the entire members. I am confident that the newly electd president **Sh. Hari Prasad ji Kanoria** will not only maintain the dignity of the sammelen but will lead it to new hights with the trusted Co-operation and devotion of our past President **Sh. Sitaram Ji Sharma** whose guidance will be very usefull in the comming times as he has prooved his ability in seeking the Co-operation of all the constituents.

We on our part feel assured that the sincere service of **Sh. Ramavtar Ji Poddar** will always be extended to the Management as he has been always a strong piller for the sammelen.

We feel proud in extending you and the newly elected President our warm goodwishes for very sucessfull tenure as president of the samelen.

Ramesh Garg
Founder General Secretary
Madhya Pradesh Marwari Samelan

अपनी बात

इस दिवालियेपन का क्या इलाज ?

– शम्भु चौधरी

यह बात सही है कि मारवाड़ी समाज के एक वर्ग ने काफी धन अर्जित किया, संग्रहित किया, संचित भी किया, इसका उपयोग किया तो दुरुपयोग भी। सामाजिक कार्यों में जी जान से खर्च किया तो शादी-ब्याहों में इसका आडम्बर करने से भी नहीं चुका। धार्मिक कार्यों या आयोजनों में धन को समर्पित किया तो खुद को पूजवाने भी लगे। समाज सेवा की तो, सेवा को बदनाम कर समाज सेवक कहलाने की एक मुहिम भी चली। कोई खुद को चाँदी में तुलवाने को सही ठहराता है, तो कोई भागवत कथा के नाम पर लाखों के खर्च को। एक दूसरे को शिक्षा देने में किसी से कोई कम नहीं। एक लाखों का विज्ञापन छपवाकर समाज को शिक्षा दे रहा है, तो दूसरा इस तर्क से कि धन उनका है वे उसको कैसे भी लुटाये। वाह भाई! वाह! कमाल का यह समाज। इस समाज का कोई सानी नहीं। कौन किसकी परवाह करता है। सभी अपने मन के मालिक हैं भला हो भी क्यों नहीं धन जो कमा लिया है बेशुमार दौलत का मालिक जो बन गया है यह समाज। मानो लक्ष्मी से लक्ष्मी की हत्या का अधिकार मिल गया हो इस समाज को।

मारवाड़ी समाज की एक सबसे बड़ी खासियत यह भी है कि इस समाज को किसी भी प्रान्त के साहित्य-संस्कृति-भाषा-कला या उनके रहन-सहन, खान-पान (यहाँ तक कि राजस्थान से भी) आदि से कोई लगाव नहीं सिर्फ और सिर्फ अपनी जीभिया स्वाद और पैसे का अहंकार इनको नीमतल्ला घाट तक पीछा नहीं छोड़ता। परन्तु इस नालायकी के लिये सारा समाज न तो दोषी है ना ही हमें समझना ही चाहिये। समाज का समृद्ध परिवार आज भी धन के इस तरह के दुरुपयोग से कोशों दूर है, यह जो भी गंदगी और धन के नंगे प्रदर्शन में लगे लोग हैं वे या तो नाजायज तरीके से अर्जित धन को खर्च कर अपनी मानसिक विकलांगता को समाज के सामने परोस रहे हैं या फिर गांव का धन है जिसे वे खुले हाथ लूटा रहे हैं। संपन्न वर्ग और समृद्ध परिवार कभी भी अपनी दरिद्रता का प्रदर्शन नहीं करेंगे, इस तरह धन की बर्बादी को जो लोग उचित ठहराते हैं वे न सिर्फ दरिद्र ही हैं ऐसे लोग विकलांग भी हैं। मानो संपन्नता की आड़ में खुद के साथ-साथ समाज की दरिद्रता का प्रदर्शन करता हो, जिससे समाज का हर वर्ग न सिर्फ दुखी है, लाचार भी हो चुका है। कुछ लोग तो आडम्बर को समाज की जरूरत मानते हैं। कहते हैं नहीं तो समाज उसे दिवालिया समझेगा, अब इस दिवालियापन का क्या इलाज ?

अपने अर्जित धन को खुद के बच्चों के ब्याह-शादियों में खर्च करने का समाज को पूरा अधिकार है, करना भी चाहिये, इसके लिये गली मत बनाईये, शान से खर्च कीजिए पर साथ-साथ कुछ नेक उदाहरण भी देते जाईये जिससे समाज को लगे कि आप सच में धनवान हो। धन से ही नहीं मन से भी धनवान हो। झूठी दलीलों के धरातल पर खुद के दिवालियेपन को समाज पर थोपकर, कोई लड़के वाले का नाम लेता है तो कोई लड़की वाले का। ''भाई कै करां आपां तो लड़की वाला ठहरा या भाई लड़की वाला ने कोई दवाब कोनी देवां अब वे अपनी मर्जी से खर्च करे तो आंपा कै कर सकां हाँ!'' ये दलीलें खुद की कमजोरी को छुपाने वाली बात है। आपकी यह दशा खुद के दिवालियेपन को जग जाहिर करती है।

हमेशा से मैं इस बात का समर्थक रहा हूँ कि उत्सव के अवसर को उत्साह के साथ मनायें लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि फिजूलखर्ची करें। जरूरत के अनुसार सजावट करें व परिवार-मित्रों के साथ उत्साह के साथ उत्सव मनायें भीड़ इकट्ठी न करें। इन दिनों ब्याह-शादियों में लोग आडम्बर तो करते ही हैं साथ-साथ इस आडम्बर को दिखाने के लिये बेवजह हजारों लोगों को जमा कर लेते हैं। पता नहीं खाने के नाम पर लोग जमा भी कैसे हो जाते हैं- कहते हैं भाई ''चेहरो तो दिखाणो ही पड़सी'' जैसे किसी मातम में जाना जरूरी हो। पिछले सालों में इसका प्रचलन तेजी से हुआ है। शहरों में एक-एक आदमी 3-4 ब्याह के कार्ड हाथ में लिये शादीबाड़ी खोजते नजर आ जातें हैं। गाँव में आज भी ऐसी स्थिति नहीं हुई है। गाँवों में शादी-ब्याह के नियम-कायदे लोग मानते हैं। इनमें आज भी समाज का भय बना रहता है। परन्तु शहरों में खासकर महानगरों में कोई किसी की सुनने को तैयार ही नहीं।

इसी प्रकार भागवत भी बंचवाईये, इसके लिये जरूरी धन की व्यवस्था भी करें परन्तु जो भागवत आप क्रूज जहाज में सुनने जा रहे हैं वो भागवत कथा को बदनाम ही करता है, जो महंत इस तरह धन के लालच में भागवत कथा को बेचने की दुकान खोल लिये हैं वे हिन्दू धर्म का विनाश करने में लगे हैं, मेरा उनसे आग्रह रहेगा कि धर्म को कभी भी किसी भी रूप में कैद करने वाले ऐसे तत्वों को पनाह न देवें। मारवाड़ी समाज यदि इसके लिये गुनाहगार है तो उसे सम्मानित न होने देवें और अपनी विद्या को धर्म के प्रति समर्पित करें न कि धन के प्रति।

नववर्ष आपका मंगलमय हो, इसी शुभकामनाओं के साथ। □

अध्यक्षीय

रिश्तों की परम्परा

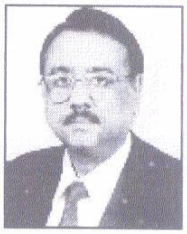

-नन्दलाल रुँगटा, राष्ट्रीय अध्यक्ष

समाज में हर परिवार सपना देखता है किसी के सपने सच हो जाते हैं तो किसी के अधूरे रह जाते हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि उसने प्रयास नहीं किया। सभी लोग अपने-अपने स्तर पर प्रयास करते हैं जो सक्षम हैं वे, जो सक्षम नहीं हैं वे भी। सफलता सभी को बराबर नहीं मिलती, जिसे मिलती है उसकी तरफ समाज की नजर स्वत: चली जाती है। मारवाड़ी समाज इसका पर्यावाची नहीं है। इस समाज को भी चारों तरफ से सफलता मिली है।

एक समय था जब हम खुद को अनपढ़ और गंवार मानते थे, एक कारोबारी बन जाना ही हमारी योग्यता मानी जाती थी। आज इस विद्या को लोग सीखने और पढ़ने के लिए बड़ी-बड़ी संस्थायें खोलने लगे हैं। कहने का तात्पर्य है कि हमें जो लोग अनपढ़ और गंवार समझते थे वे कितने विद्वान थे? यह आप खुद ही अंदाजा लगा सकते हैं। इसी प्रकार हमारी भारतीय संस्कृति जिसमें अनगिनत रिश्तों की परम्परा देखने को मिलती है जो कहीं न कही हमारे जीवन का अंग बन जाती है। माता-पिता, भाई-बहन, भईया-भाभी, चाचा-चाची, ताऊ-ताई, दादा-दादी, बुहा-फूफा, फिर शुरू होते हैं चचरे भाई-बहन का परिवार, नाना-नानी का परिवार, मामा-मामी, मौसा-मौसी, सास-ससुर, जेठ-ननद, देवर-देवरानी, साला-साली, जीजा-बहनोई आदि का परिवार इस प्रकार हमारे रिश्ते की कड़ी पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक लता की तरह फलती-फूलती जाती है जिसके लिये पश्चिमी सभ्यता आज तक भटकती नजर आ रही हैं। इनकी सभ्यता इसके पहली दहलीज पर ही दम तोड़ती नजर आती है। अर्थात माता-पिता का क्रम ही बिखरता सा नजर आता है। इनके यहाँ शादी-ब्याह एक गुड्डा-गुड्डी का खेल समझ में आता है वहीं भारतीय परम्पराओं में सात जन्मों का बंधन माना जाता है। विवाह के होते ही दो परिवारों के रिश्ते की कड़ी स्वत: आपस में जुड़ जाती है। यह परम्परा पीढ़ियों से हमारे यहाँ चली आ रही है। वहीं दूसरी तरफ पश्चिमी सभ्यता के अधिकतर बच्चे 13 साल से ही माता-पिता के प्यार को तरसते हैं वहीं भारतीय उपमहाद्वीप में 25 साल तक की उम्र के बच्चे अपने माता-पिता की क्षत्र-छाया में पलते हैं। आज दुनिया भर के लोग भारतीय रीति-रिवाज़ों पर, यहाँ के संत-मुनियों की विद्या पर, भारतीय पहनावे को लेकर अध्ययन कर रहे हैं।

इन सबके बीच हमारी संस्कृति न सिर्फ फल-फूल रही है, विभिन्न आस्थाओं के उपरान्त भी हम एक दूसरे से जुड़े हैं। मारवाड़ी समाज भी इस संस्कृति का एक अंग है। राजस्थान व इसके आस-पास के अंचल से प्रवास कर देश-विदेश के विभिन्न हिस्से में बसा यह समाज, अपनी अलग भाषा-बोली, पहनावा, रहन-सहन और खान-पान होने के बावजूद इस समाज ने देश के प्राय: सभी प्रान्तों में अपने कारोबार को न सिर्फ फैलाया, इतर समाज के बीच अपनी आस्था भी बनाई है, इस परम्परा का हमें आगे भी निर्वाह करना होगा।

इसी प्रकार हमारे गीत-संगीत जिसमें राग और स्वर को लेकर अध्ययन चल रहा है। वीणा, बाँसुरी, शहनाई, हारमोनियम, बीन, तबला, ठोलक-ठोलकी आदि हजारों वाद्य यंत्र जिसकी कल्पना तक उनके हंगामे वाले संगीत को बौना साबित करती आ रही है। भारत के विभिन्न प्रान्तों की बोली अलग-अलग लिपि, सभी का संबंध संस्कृत से ऐसा कैसे संभव हो सकता है? वे लोग सोच भी नहीं पाते। हमारे यहाँ का अस्त्र-शस्त्र अर्थात रामायण-महाभारत जिसको देखकर कोई भी हमारे देश की परम्पराओं का सहज अंदाजा लगा सकता है कि हमारे लिये एक तरफ जहाँ गुरु, माता-पिता, भईया-भाभी की आज्ञा का कितना महत्व माना जाता है। वहीं सत्य की रक्षा के लिये शस्त्र को अंगीकृत कर युद्ध में दुश्मन को ललकाराना भी धर्म है।

भारतीय परम्पराओं में परिवारों के सम्बन्धों को किस प्रकार एक-दूसरों से जोड़ा गया है कि परिवार बिखर भी जाय तो रिश्तों से बंधा रह जाता है। पर हमें दुख होता है जब हम इतने सारे रिश्तों के बीच हम अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम में पाते है। भारतीय संस्कृति जहाँ इसकी जरूरत को स्वीकार नहीं करती, वहीं एकल परिवार के ताने-बाने बिखर जाने से इसकी उपयोगिता को नकारा भी नहीं जा सकता। आईये हम एक बार फिर से इस विषय पर विचार करें। जिससे कि हमारी परिवारिक एकता तथा सामाजिक समन्वय बना रहे

इस पर भी हमें सतर्क पहल करनी चाहिये।

नये संकल्प ही नये प्रकल्प निर्मित करेंगे

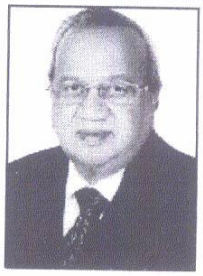

-राम अवतार पोद्दार
राष्ट्रीय महामंत्री

समय निरन्तर गतिमान रहता है। यही सृष्टिक्रम है। इसी सन्दर्भ का एक फिल्मी गीत कभी कानों में पड़ा था। आज स्मरण हो आया इसीलिए उद्धृत कर रहा हूं। गीत यूं है कि-

दिन-महीने-साल गुजरते जाएंगे,
हम प्यार से जीते-प्यार से मरते जायेंगे।

ये प्यार से जीने मरने की बात मुझे अच्छी लगी। क्योंकि यह प्यार जुड़ाव और उड़ाव की प्रगाढ़ता को रेखांकित कर रहा है। सम्मेलन का मारवाड़ी समाज के प्रति और मारवाड़ी समाज का सम्मेलन के प्रति प्यार प्रगाढ़ होता रहे और दिन महीने साल गुजरते रहें।

पल-घड़ी-पहर-दिन-सप्ताह-माह की यात्रा करते हुए सन् 2010 हमारे जीवन से विदा हो रहा है, और सन् 2011 की आमद हो रही है। मैं सम्मेलन की समस्त कार्यकारिणी, सम्मेलन के सभी सक्रिय कार्यकर्त्ताओं तथा सम्मेलन से जुड़े प्रत्येक सदस्य को इन शब्दों में नव वर्ष की हार्दिक मंगल कामनाएं देता हूं-

बढ़े सुयश, बैभव बढ़े, बढ़े हर्ष-उत्कर्ष।
आप सभी के वास्ते, शुभ हो नूतन वर्ष।।

आप सभी को भलि-भांति विदित है कि सन् 2010 में सम्मेलन की कौस्तुभ जयन्ती से जुड़ी अनेकानेक रचनात्मक प्रक्रियाएं सम्पन्न हुई हैं। यह वर्ष सम्मेलन का कौस्तुभ जयन्ती वर्ष रहा। पूरा वर्ष कौस्तुभ जयन्ती वर्ष के रूप में मनाया गया। इस वर्ष जिस मात्रा में सम्मेलन सदस्यों की संख्या बढ़ी है वह संख्या न केवल सम्मेलन के भविष्य के लिए शुभ संकेत देने वाली है अपितु उससे सम्मेलन को बहुत बल भी मिला है। यह वर्ष हमें इस बात का संकेत देते हुए बीत रहा है कि आगत् समय में सम्मेलन मारवाड़ी समाज का एक ऐसा संगठन होगा, जो उदाहरण बनेगा।

मैं यही कामना करता हूं कि सन् 2011 का प्रारम्भ हमें नई भावनाओं और नई संभावनाओं का उपहार दे। हमें अपने आप में नई भावनाएं और संभावनाएं तलाशनी है और उन्हें मुखर करना है, ताकि हम सम्मेलन की रचनात्मक गतिविधियों में इजाफा कर सकें। सम्मेलन के स्वर्णिम इतिहास में नये अध्याय जोड़ सकें। मारवाड़ी समाज की प्रत्येक इकाई को हम सम्मेलन से जुड़ने हेतु प्रेरित कर सकें। और यह तभी संभव है जब हम सामाजिक उत्थान हेतु कुछ न कुछ नया करने के लिए सम्मेलन को सक्रिय रखें। सम्मेलन तभी सक्रिय रह सकेगा जब हम सक्रिय रहेंगे। हम सक्रिय तो हैं पर अब हमें अपनी सक्रियता में योजनाबद्ध होकर नवीन एवं सकारात्मक गति का संचार करना है।

सम्मेलन ने इसका श्रीगणेश भी कर दिया है। सन् 2011 के प्रथम माह की 30 तारीख को सम्मेलन का अधिवेशन बिहार की राजधानी पटना में भव्यता के साथ सुसम्पन्न किया जाना है। इसकी भव्यता और सफलता आप सभी की अपनायतपूर्ण सहभागिता पर निर्भर करती है। मैं आप सभी से अपील करता हूं कि आप अधिक से अधिक संख्या में अपनी उपस्थिति इस अधिवेशन में दर्ज कराएं ताकि आप सभी की उपस्थिति एवं सम्मति से सम्मेलन को अपनी भावी योजनाओं को सुनिश्चित करने में बल मिले व सुगमता हो। हम एक साथ मिलकर नये-नये आयाम गढ़ने के संकल्प लें क्यूंकि नये संकल्प ही नये प्रकल्प निर्मित करते हैं। हम भी ऐसे प्रकल्प स्थापित करने का बीड़ा इस अधिवेशन में उठाएं जो मारवाड़ी समाज के लिए हितकर हों, उत्थानकारी हों, समाज को सम्मेलन और संगठन की उपादेयता से अवगत करवाने वाले हों, समरसता को व्याख्यायित करने वाले हों, संगठन की शक्ति का प्रतीक हो।

मैं पुनः एक बार सभी को नववर्ष की आन्तरिक व हार्दिक सद्भावनाएं और शुभकामनाएं देते हुए यही कहूंगा कि हमें मिलकर सन् 2011 में यह प्रमाणित कर देना है कि मारवाड़ी सम्मेलन केवल एक संगठन नहीं, बल्कि अखिल भारतवर्ष में मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व करने वाला एक सशक्त व सुदृढ़ प्रकल्प है।

76वें स्थापना दिवस पर 'मारवाड़ी समाज : कल, आज और कल' विषय पर हुई संगोष्ठी

हमें समाज से लेने नहीं, देने की बात सोचनी चाहिए - रुँगटा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के 76वें स्थापना दिवस पर 'मारवाड़ी समाज - कल, आज और कल' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में सम्मेलन अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा, पूर्व अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान, राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री संजय हरलालका, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया, संयोजक कैलाशपति तोदी।

कोलकाता। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से 76वें स्थापना दिवस के मौके पर शनिवार को हेमंत बुस सरणी स्थित मर्चेंट चेंबर ऑफ कॉमर्स के हॉल में '**मारवाड़ी समाज - कल, आज और कल**' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर सम्मेलन के अध्यक्ष नंदलाल रुंगटा ने सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष रामदेव चोखानी समेत सम्मेलन से जुड़े अन्य दिवंगत लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

विषय प्रवर्तन करते हुए मोहनलाल तुलस्यान ने कहा कि 1935 में सम्मेलन का गठन राजनैतिक हस्तक्षेप के लिए किया गया था। बाद में इसने समाज सुधार का बीड़ा उठाया। उन्होंने कहा कि पर्दा प्रथा, नारी शिक्षा व विधवा विवाह के क्षेत्र में सम्मेलन ने सहारनीय कार्य किया है, लेकिन अभी बहुत कुछ करना बाकी है। उन्होंने सदस्यता बढ़ाने पर जोर देते हुए कहा कि हमें यह लक्ष्य लेकर आगे बढ़ना चाहिए कि सम्मेलन के शताब्दी वर्ष में हमारे सदस्यों की संख्या 10 से 12 लाख हो। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समाज के आगे बढ़ने का सबसे बड़ा कारण अपनी भूल मानना और उसे तत्काल सुधारना है।

स्थापना दिवस पर सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष स्व. रामदेव चोखानी सहित अन्य दिवंगत लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए जुगल किशोर जैथलिया ने कहा कि मारवाड़ी ही नहीं, हर समाज में कुछ न कुछ खामियां हैं। उन्होंने कहा कि कल हमारे सामने सामाजिक कुरीतियां (पर्दा प्रथा, नारी शिक्षा व विधवा विवाह) की समस्या थी। आज की परिस्थिति में लगभग ये कुरीतियां समाप्त हो चुकी हैं, लेकिन फिजूलखर्ची और दिखावा बढ़ा है। हमें इस पर अंकुश लगाना होगा और यह कोशिश करनी होगी कि आने वाला कल समस्या रहित हो। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि हमारे नैतिक मूल्यों में गिरावट आई है और संस्कार धूमिल हो रहे हैं। अब तक राजस्थानी भाषा को मान्यता न मिलने के पीछे उन्होंने राजस्थानियों की उदासीनता को दोषी ठहराया। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि युवाओं को राजस्थानी साहित्य, राजस्थानी संस्कार, राजस्थानी परिधान, राजस्थानी संस्कृति से अवगत करने का जरूरत है।

नैतिक मूल्यों में गिरावट चिंतनीय - जुगल किशोर जैथलिया

संगोष्ठी में उपस्थित वक्ता बाएं से श्रीमती शोभा सादानी, जुगलकिशोर जैथलिया, पत्रकार राजीव हर्ष व सांवरमल भीमसरिया

अधिक खुलापन भी समाज के लिए घातक - शोभा सादानी

उन्होंने दु:ख जताते हुए कहा कि आज विद्वता (सरस्वती पुत्र) नहीं धन्ना सेठ (लक्ष्मी पुत्र) का सम्मान किया जा रहा है।

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्षा शोभा सादानी ने अपनी बात रखते हुए कहा कि बुराई से निरंतर लड़ते रहने की जरुरत है। उन्होंने कहा कि अधिक खुलापन भी समाज के लिए घातक है। उन्होंने सवाल उछालते हुए कहा कि क्यों लोग मारवाड़ी समाज से जुड़ेंगे? समाज ने लोगों के लिए क्या किया है? उन्होंने सुझाव देते हुए कहा कि सम्मेलन को मारवाड़ी समाज के लोगों के लिए ऐसा कोई पहचान पत्र बनाना चाहिए, जिसे पाने को समाज के लोग आतुर रहे। उन्होंने परिवर्तन को वक्त की पुकार बताते हुए कहा कि संस्कृति को ध्यान में रखते हुए बदलाव के रास्ते पर चलना चाहिए। उन्होंने कहा कि भौतिकवाद के युग में लोग धन के पीछे भाग रहे हैं और उनके बच्चों का लालन-पालन नौकर या आया कर रहीं है। ऐसे में हम कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि बच्चे संस्कारवान हों और माता-पिता का सम्मान करें। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या पर भी अफसोस जताते हुए कहा कि पुरुषों की कायरता के कारण यह अपराध बढ़ रहा है। देश में लिंगानुपात में लगातार गिरावट आ रही है। उन्होंने कहा कि पहले लोगों में समर्पण की भावना थी। फिर समझौता होने लगा, इसके बाद समानता की बात आई और अब लोग श्रेष्ठता के लिए लड़ रहे हैं।

संगोष्ठी में उपस्थित गणमान्य लोग

समाजसेवी सांवरमल भीमसरिया ने कहा कि जहां क्रिसमस

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

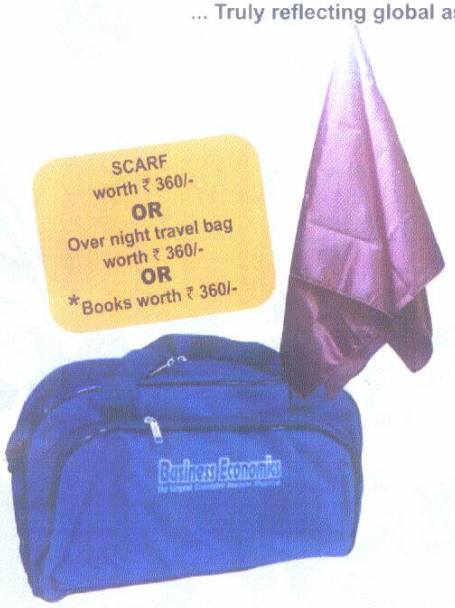

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe Business Economics

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	144	72	☐ Tie + Scarf OR ☐ Bag + Scarf ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	48	24	☐ Scarf OR ☐ Bag OR ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 50)	120/-	NIL	290/-	-	-	☐ Exclusively for Students
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 50)	120/-	NIL	290/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City / District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature : _____ date: _____

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

राजस्थानी गप्प

- डॉ. मनोहरलाल गोयल

बन्दी हो, हड़ताल हो या हो झूंठी गप्प।
चलती-फिरती जिन्दगी हो जावै है ठप्प।।
हो जावै है ठप्प, पड़ै लागै है डंडा।
सेंकै अपणी रोटी, राजनीति का पंडा।।
दर्द, पीड़ समझै नहीं, बहरा सब इंसान।
परेशान जनता हुवै, आफत में रै जान।।

अग्रोहा में रीत ही, रहबा नै जो आवै।
पाकर मुद्रा-ईंट वो, आवासी बण जावै।।
आवासी बण जातो, भाईचारों पातो।
घर मिल जातो, धन मिल जातो, वो बस जातो।।
आपां पलटी रीत, हवा अब लागी शहरी।
धेलो भी देवां नहीं, मां जायो है बैरी।।

जिन्दा रहणूं कठिन है, पैरों चायै टोप।
मनमोहन का हाथ में मैंगाई की तोप।।
मैंगाई की तोप उतरवा लेसी गाबा।
खाली पेट भजो मन सूं काशी अर काबा।।

रोणू-धोणूं व्यर्थ है, कितणां ई लाचार?
सुणबो ई चोवै नहीं, मनमोहन सरकार।।

पिता कमल को भगत है, बीजेपी कै साथ।
बेटो थाम्यो प्रेम सूं कांग्रेस को हाथ।।
कांग्रेस को हाथ, धाक, सत्ता में पाई।
पत्नी होगी वाम करै लागी अगुवाई।।
राजनीति घर में घुसी, घर बणग्यो कुरुक्षेत्र।
अलग-अलग झंडा लग्या, अलग-अलग रणक्षेत्र।।

लाम्बी आयी बीनणी, नाटो रहग्यो बीन्द।
क्रिकेट का खेल में जैयां बल्लो-गींद।।
जैयां बल्लो-गींद, बीन्द नै सुपनो आवै।
कुण जाणै कद बल्लो अपणौ कर्म निभावै।।
अर चिन्ता में बीनणी, कैयां बाहर जावै?
लोग साथ म देखकर, मां-बेटो बतळावै।।

–गोयल भवन, बिष्टुपुर,
जमशेदपुर–831001

बिरला दम्पति श्री बसन्तकुमार बिरला एवं डॉ. सरला बिरला को राष्ट्रीय शिखर प्रतिभा सम्मान

कोलकाता। कोलकाता की सुप्रसिद्ध साहित्यिक-सामाजिक संस्था श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रवर्तित **'राष्ट्रीय शिखर प्रतिभा सम्मान'** का प्रथम सम्मान उद्योग जगत के भीष्म पितामह, धर्म एवं संस्कृति के उन्नायक तथा लोक-कल्याण हेतु समर्पित बिरला दम्पति श्री बसन्त कुमारजी बिरला एवं डॉ. सरला बिरला को आगामी रविवार 9 जनवरी 2011 ई. को महाजाति सदन के मुख्य प्रेक्षागृह में आयोजित सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह में निवर्तमान शंकराचार्य एवं भारत माता मंदिर, हरिद्वार के संस्थापक महामण्डलेश्वर स्वामी श्री सत्यमित्रानन्द गिरिजी महाराज के कर-कमलों द्वारा प्रदान किया जायेगा। साथ ही इस समारोह में कोलकाता की कतिपय सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा भी बिरला दम्पति का सम्मान किया जायेगा।

ज्ञातव्य है कि 1918 ई. में स्थापित कुमारसभा पुस्तकालय ने अपने शताब्दी दशक में इस सम्मान का प्रवर्तन किया है, जो प्रत्येक वर्ष किसी एक ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व को प्रदान किया जायेगा जिसने अपने अप्रतिम अवदान से समाज एवं राष्ट्र को समृद्ध किया है। कुमारसभा पुस्तकालय अपने इस शताब्दी दशक में विभिन्न क्षेत्रों के 8 विशिष्ट व्यक्तियों को सम्मानित करेगी। महाबीर बजाज, उपाध्यक्ष ने यह सूचना दी।

यात्रा संस्मरण

सौराष्ट्रे सोमनाथ च, श्री शैले मल्लिकार्जुनम ।
उज्जयिन्यां महाकाल मोङ्कारम मलेश्वरम् ।।1।।
परल्यां वैद्यनाथं, डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतु बन्धे तु रामेशं, नागेशं दारूकावने ।।2।।
वाराणस्यां तू विश्वेशं, त्रयम्बके गोतमी तटे ।
हिमालये तू केदारं, घुश्मेशं चशिवाल्ये ।।3।।
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नर ।
सप्त जन्म कृतं पापं स्मरणेन विनश्यन्ति ।।4।।

चार धाम में एक धाम तथा द्वादश ज्योर्तिलिंगम में एक रामेश्वरम् दर्शन की प्रबल इच्छा जागृत होने से मैं पितरों के आशीर्वाद से दक्षिण भारत भ्रमण किया। माँ दुर्गा का आह्वान कर नवरात्र में चैन्नई पहुंचे। यहाँ पर मारवाड़ियों की एक संस्था अग्रवाल सभा में समाज विकास पत्रिका की प्रति देखकर बहुत ही अच्छा लगा। यहां पर प्रसिद्ध कपिलेश्वर मंदिर का दर्शन कर समुद्र तट का भ्रमण किया। तेन्जोर में ऐतिहासिक शिव मन्दिर दर्शन, विशाल नन्दी दर्शन किये। तेन्जोर चित्रकला भारत प्रसिद्ध है। ट्रिची में विशाल श्रीरंगम मंदिर है।

रामेश्वरम दर्शन विजयादशमी के दिन हुआ। आज ही के दिन राम ने रावण पर विजय प्राप्त की थी। यानि धर्म की अधर्म पर, पुण्य की पाप पर, सत्य की असत्य पर विजय। सुबह 5 बजे रामेश्वरम का मणि दर्शन, 6 बजे महासमुद्र (बंगाल की खाड़ी) की पूजा-महासमुद्र स्नान, पितरों को तर्पण एवं सूर्य नमस्कार। 22 कुण्ड स्नान का भी महत्व है। कुण्ड स्नान के बाद रामेश्वरम् अभिषेक। यहां पर गंगोत्री का जल चढ़ता है। यहां समुद्र शान्त है। लंका चढ़ाई के समय भगवान राम ने समुद्र के रास्ता न देने से तीर सन्धन किया था तब समुद्र ने ब्राह्मण रूप में प्रकट होकर राम की प्रार्थना की। भगवान राम ने तीर का सदुपयोग कर समुद्र को शान्त किया।

तत्पश्चात हमने कन्याकुमारी (दूरी करीबन 400 किमी.) के लिये प्रस्थान किया। यहां का सूर्योदय, सूर्यास्त एवं चन्द्रोदय प्रसिद्ध है। यहां दुर्गा का विशाल मन्दिर है। तीन महासमुद्र 1. बंगाल की खाड़ी, 2. भारत महासागर, 3. अरब सागर एक जगह आकर मिलती है। तीन दिशाओं से तीन महासमुद्रों का संगम-प्रकृति का यह नजारा अपने आप में अद्‌भुत है। इन महासमुद्रों में तीन तरह की पीली मिट्‌टी, लाल मिट्‌टी व काली मिट्‌टी एक जगह आती है। इस संगम में नहाने का अपूर्व आनन्द है।

लहर कह रही है- हे महासागर- विश्व के तीन चौथाई हिस्सों में सात रूपों में (सात महासमुद्र) फैले हुए हो-

मैं एक लहर,
युग-युग से तेरे साथ।
तेरा ही अंग,
तेरे में ही समाहित।
तेरे साथ चलती हुई,
तेरे ही साथ मचलती हुई,
तेरे ही साथ वाष्प बन,
जनहित में हवा में उड़
बादल बन बरसात हुई।
हवा का एक झोंका आया,
बेवफा होकर तुने मुझे किनारे पटका।
मैं टूट गई,
चूर चूर हो गई,
हार नहीं मानी,
तेरे में ही समाहित हुई
क्या यही जीवन का अटल सत्य है।

लौटते समय हमने मदुराई स्थित मीनाक्षी मन्दिर एवं तिरुमाला स्थित तिरुपति बालाजी का दर्शन किया।

प्रेषक :- राम अवतार खेतान
पी-343, सी.आई.टी.रोड, कोलकाता-54

सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार एवं भंवरमल सिंघी समाजसेवा पुरस्कार हेतु बैठक

शनिवार, 4 दिसम्बर 2010 अपराह्न 3.30 बजे

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार तथा भंवरमल सिंघी समाजसेवा पुरस्कार हेतु आये हुए आवेदन एवं अन्य नामों पर विचार करने हेतु बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा के कोलकाता स्थित कार्यालय में हुई।

संयोजक श्री शम्भु चौधरी ने बताया कि इस पुरस्कार हेतु डॉ. अर्जुन सिंह शेखावत, श्री श्याम महर्षि, श्री नागराज शर्मा, डॉ. तारा लक्ष्मण गहलोत एवं श्री सीताराम महर्षि के नाम प्राप्त हुए हैं। श्री रतन शाह ने क्रमवार सभी के परिचय की जानकारी सभी को दी। सभा में सर्व सम्मति से राजस्थान के रतनगढ़ निवासी श्री सीताराम महर्षि का नाम तय किया गया।

भंवरमल सिंघी समाजसेवा पुरस्कार हेतु प्राप्त आवेदनों एवं अन्य नामों कीजानकारी कमेटी के संयोजक श्री संजय हरलालका ने दी। नागौर की श्रीमती रामकन्या मनिहार, मेघालय के श्री शंकर लाल सिंघानिया, बिहार के श्री विश्वनाथ केडिया एवं श्री राजेश बजाज के नाम के आवेदनों सहित झारखण्ड के श्री भागचन्द पोद्‌दार के नाम पर चर्चा हुई।

व्यापक विचार विमर्श के बाद सम्मेलन की नीतियों के अनुसार, समाज सेवा एवं समाजसुधार के कार्य करने वाले रांची के श्री भागचंद पोद्‌दार के नाम पर आम सहमति बनी।

अन्त में अध्यक्ष ने बताया कि यह पुरस्कार जनवरी 2011 में पटना में होने वाले 22वें राष्ट्रीय अधिवेशन में दिया जायेगा

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, नगर शाखा, भागलपुर

भागलपुर नगर में राजस्थानी समाज द्वारा स्थापित एवं संचालित संस्थायें

धर्मशाला

1. श्री गिरधारीलाल जैन धर्मशाला
2. श्री देवी बाबु ढांढनिया धर्मशाला
3. श्री हरदेवदास डोकानिया धर्मशाला
4. श्री दिगम्बर जैन मंदिर धर्मशाला
5. श्री टोरमल दलसुखराय धर्मशाला
6. श्री विशुनदयाल गजानन्द पोद्दार धर्मशाला
7. श्री राणीसती धर्मशाला
8. श्री बैजनाथ जिलोका धर्मशाला
9. श्री जीवराजका भवन
10. श्री छोटेलाल नथमल बुधिया भवन
11. श्री रामेश्वरलाल साह ट्रस्ट धर्मशाला
12. श्री श्वेताम्बर जैन मंदिर धर्मशाला
13. श्री कमलादेवी (बंशीधर) डोकानिया भवन
14. श्री अग्रसेन भवन
15. श्री राजस्थानी मेढ़ क्षेत्रीय भवन धर्मशाला
16. श्री ब्राह्मण मंडल भवन धर्मशाला
17. श्रीमती रुकमणी देवी बुधिया धर्मशाला
18. श्री श्याम भक्त मंडल भवन
19. श्री विशुनदयाल टिबड़ेवाल विवाह धर्मशाला

शिक्षण संस्थायें

1. श्री मारवाड़ी महाविद्यालय
2. श्री मारवाड़ी कन्या पाठशाला
3. श्री मारवाड़ी पाठशाला
4. श्री बालसुबोधिनी पाठशाला
5. श्री यतीन्द्रनाथ अष्टांग आयुर्वेद महाविद्यालय
6. श्री भगवान वासुपुज्य दिगम्बर जैन विद्यालय
7. श्री भजनाश्रम विद्यालय
8. श्री हनुमान आदर्श विद्यालय
9. श्री नवयुग विद्यालय
10. श्री झुनझुनवाला आदर्श बालिका विद्यालय
11. श्री शारदा झुनझुवाला आदर्श महिला महाविद्यालय
12. श्री रामेश्वरलाल नोपानी सरस्वती विद्या मंदिर
13. श्री आनन्दराम ढांढनिया सरस्वती विद्या मंदिर
14. श्री गणपतराय सलारपुरिया सरस्वती विद्या मंदिर
15. श्री पूरणमल सावित्री देवी बाजोरिया स. वि.मंदिर
16. श्री नारायणी देवी सलारपुरिया सरस्वती विद्या मंदिर
17. श्री जैन विद्यालय
18. श्री मुनी राम खेतान बालिका शिशु वाटिका
19. श्री मारवाड़ी व्यायामशाला
20. श्री मारवाड़ी पाठशाला समिति (वित्त कमिटी)
21. श्री संस्कृत पाठशाला
22. संत चेतन हरि सरस्वती शिशु मंदिर

दातव्य संस्थायें

1. श्री मारवाड़ी सदावर्त पंचायत
2. श्री मारवाड़ी सेवा समिति
3. श्री भूदरमल ढांढनिया न्यास
4. श्री आनन्द सेवा ट्रस्ट
5. श्री सेठ बलदेवदास साह चैरिटेबल ट्रस्ट
6. श्री बंशीधर कमला देवी डोकानिया ट्रस्ट
7. श्री मितानन्द छापोलिका ट्रस्ट
8. श्री चौवे चैरिटेबल ट्रस्ट
9. श्री केजरीवाल ट्रस्ट
10. श्री किशोरपुरिया चैरिटेबल ट्रस्ट
11. श्री नोरंगीलाल केडिया चैरिटेबल ट्रस्ट
12. श्री बाबुलाल बुधिया ट्रस्ट
13. श्री मोती बाई महादेवलाल पोद्दार ट्रस्ट
14. श्री रामेश्वर लाल साह चैरिटेबल ट्रस्ट
15. श्री मोहनलाल बनारसी देवी डोकानिया ट्रस्ट

सेवा संस्थायें

1. श्री गोशाला, भागलपुर
2. श्री कृष्ण गोशाला, टीकोरी
3. श्री मोहन गोशाला, मोहनपुर
4. श्री गोसदन, शानकुंड
5. श्री मारवाड़ी सुधार समिति
6. श्री हिन्दुस्तान क्लब
7. श्री जागृति क्लब
8. श्री मारवाड़ी महिला समिति
9. श्री रामानन्दी देवी हिन्दू अनाथालय
10. श्री सेठ बलदेवदास साह चक्षु अस्पताल
11. श्री मोती मातृ सेवा सदन
12. श्री श्याम भक्त मंडल न्यास
13. श्री मारवाड़ी युवा मंच
14. श्री अग्रवाल युवा मंच
15. श्री भारतीय सेवा संघ
16. श्री भागलपुर धार्मिक सेवा संघ
17. श्री केडिया महासभा
18. श्री वेदांत सत्संग संस्थान
19. श्री महिला धर्म संघ
20. श्री कृष्ण सदन संस्थान
21. श्री आनन्द चिकित्सालय
22. श्री जैन औषधालय
23. श्री भगवान महावीर जन कल्याण समिति
24. श्री नवकुष्ठ आश्रम
25. श्री ब्राह्मण दातव्य औषधालय
26. श्री केडिया दातव्य औषधालय

27. श्री चौबे होमियेपैथी चिकित्सालय
28. श्री बंशीधर कमला देवी होमियो सेवा
29. श्री मुरली चिकित्सालय
30. श्रीमती रुकमणी देवी बुधिया महिला अस्पताल
31. श्री लायन्स सेवा केन्द्र
32. श्री दिगम्बर जैन परिषद
33. श्री अखिल भारतीय राजस्थानी सभा
34. श्री लायन्स क्लब ऑफ भागलपुर
35. श्री रावतमल नोपानी छात्रावास

अन्य संस्थायें

1. बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
2. बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति
3. टेक्सटाइल्स मर्चेन्ट चेम्बर ऑफ कॉमर्स
4. ईस्टर्न बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज
5. श्री हँसकला मारवाड़ी संकीर्त्तन समिति
6. भागलपुर जिला अग्रवाल सम्मेलन
7. अग्रसेन जयन्ती समारोह समिति
8. जैन पुस्तकालय
9. राजस्थानी मैढ़ क्षेत्रिय सभा

देव स्थान

1. श्री महावीरजी मंदिर
2. श्री कालीजी मंदिर
3. श्री बिहारीजी मंदिर (मोहरी मंदिर)
4. श्री रंगजी मंदिर (कमला मंदिर)
5. श्री सत्यनारायण मंदिर
6. श्री दूधेश्वर महादेव मंदिर
7. श्री कूपेश्वर महादेव मंदिर
8. श्री भूतनाथ मंदिर
9. श्री श्याम बाबा मंदिर
10. श्री राधा कृष्ण मंदिर
11. श्री राणी सती मंदिर
12. श्री राम-जानकी मंदिर
13. श्री अन्नपूर्णा मंदिर
14. श्री मारवाड़ी ब्राह्मण मंडल अन्नपूर्णा मंदिर
15. श्री दिगम्बर जैन मंदिर
16. श्री श्वेताम्बर जैन मंदिर
17. श्री श्वेताम्बर पार्श्वनाथ जैन मंदिर
18. श्री चम्बापुर दिगम्बर जैन मंदिर
19. श्री चम्बापुर दिगम्बर जैन पंथी मंदिर
20. श्री चम्बापुर श्वेताम्बर जैन मंदिर
21. श्री हनुमान गंगाघाट एवं मंदिर

....

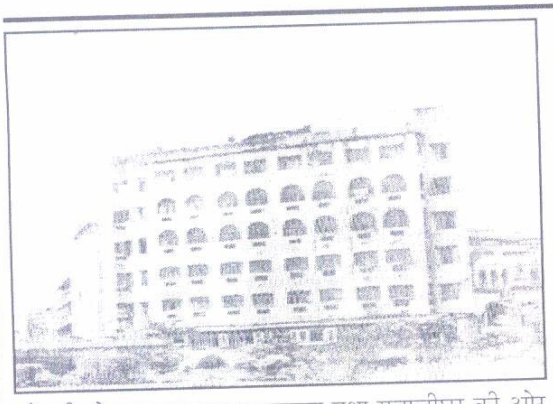

गौहाटी गोशाला का दूसरा दरवाजा तथा गुवालीघर की ओर उन्मुख गौवें।

ग्राम नरोदरा (लक्ष्मणगढ़-सीकर) में श्रीमती रतनी देवी सिंघानिया स्मृति भवन।

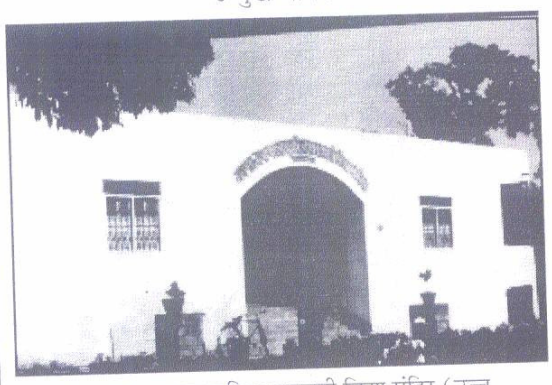

गणपतराय सलारपुरिया सरस्वती विद्या मंदिर (उच्च विद्यालय) नगरा कोठी, चम्पानगर भागलपुर (बिहार)

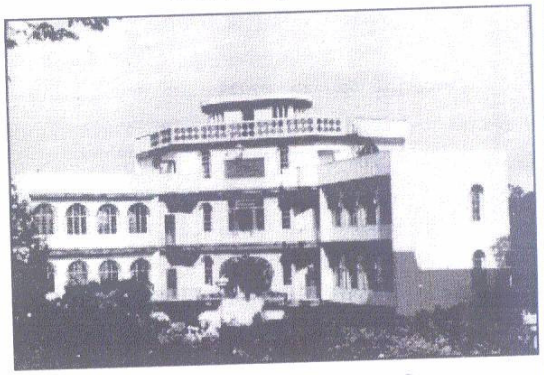

भागलपुर (बिहार) में स्थित मातृ मन्दिर।

संगठन का मूल उद्देश्य : एकता

– सीताराम बाजोरिया

विज्ञान और प्रगति के युग में हरेक जाति की आपकी एक महत्ता है जिकी उपेक्षाव कोई करनो चाव तो भी नहीं कर सक ह। विशिष्ट समुदाय बनाकर रहनो प्राणी को आरम्भिक एवं स्वभाविक आचार है जो भिन्न- भिन्न राजनीतिक मान्यताओं म भी लोप नहीं होन पाव। साम्यवाद जो प्रबल जाति विरोधी देशां म भी समान पेशा क आधार पर या कि विशिष्ट स्तर, समानता क आधार पर संगठन की स्थापना बनी है। जो प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष भारत की युग युगानि सम्बन्धी मान्यता एवं विचारधारा को समर्थन करी है।

कोई भी संगठन को मूल उद्देश्य होव है एकता को परिचय। जिको आधार पाकर सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यावहारिक, धार्मिक, आर्थिक, परमार्थिक इत्यादि कार्य मूर्त रूप पाव है। परिवार को परिवार स जुड़णो समाज न जन्म देव है विभिन्न समाज को मिलन संस्कृति न परिभाषित कर है और संस्कृतिक को सभ्यता मिलन सबल राष्ट्र को प्रतीक बन जाव है। जब समाज हित , राष्ट्रहित, धर्म रक्षा की अवधारणा लेकर कोई संगठन को विस्तार होव है तो वो विशिष्ट और विलक्षण संगठन बन जाव है और आपां श्री श्री १०८ महाराजा सूर्यवंशी अग्रसेन जी का वशंज हाँ जो कि समाज परिपाटी चलाकर गरीब से अमीर बनाया जब कि मार्कस अमीर से गरीब बनाया। काल खण्ड म्हारा पूर्वज कारणवश राजस्थान चला गया तथा उठ से व्यापार के लिये देश में जगह जगह फैल गया। लेकिन आपण पूर्वजा को दिये हुआ संस्कार के कारण इन की खुशबु तरह फैल गया। स्थानीय लोग आपण व्यवहार, विचार, इमानदारी देखकर आपां लोग न पंच बनाया।

आपणों मारवाड़ी सम्मेलन अपने आप मैं सगली विलक्षणता समेटे हुए एक अति विशिष्ट संगठन है इमे कोई शंका नहीं है।

जातिगत आधार पर सैकड़ों संगठन या संस्था सिर्फ सामाजिक कारण स आपक कोई स्वार्थ की पूर्ति के लिये यदा कदा एकत्र होव है जब कि आपण संगठन क प्रादुर्भाव को मुख्य कारण ही समाज की हित रक्षा एवं नर सेवा है। देव तुल्य कारण से पोषित इ संगठन स जुड़णो आपां सभी भाईयां के लिये एक गर्व की बात होनी चाहिए।

स्वयं से आग बढ़कर संगठन से जुड़कर आपकी भूमिका निश्चित करनी तथा आपण मारवाड़ी समाज की गरिमा की रक्षा करनी, तदुपरांत समस्त मानव जाति को चिंतन क साग साग आपण समाज क भाइयों क हित क बार में कल्याण कारी योजना बनानी आपणो पुनित दायित्व न निभाकर ही संसार में पर्दापण न सार्थक बनाया जा सक है।

लेकिन समय समय पर म्हान आत्म चिंतन करतो रहनो चाहिये ताकि सेवा पथ का वाहक का पर्याय म्हारा मारवाड़ी सम्मेलन अपनी त्रुटियां न पहचान तथा परिमार्जन कर क समाजोन्मुखी बन सक। म्हान देखनो है कि वे म्हें लोग निच लिख मानदण्ड न भूल तो नहीं रहया है।

१. के आपां आपण समाज के सबस अभाव ग्रस्त भाई की चिन्ता कर रहया हाँ?

२. म्हें निर्धन छात्रों क लिए विधालय खोलना भूल तो नहीं रहया या जो विधालय पहले स उसको व्यवसायीकरण तो नहीं कर रहया।

३. आपण समाज न पिछले ३० वर्षा में कितनी धर्मशाला, गौशाला चिकित्सालय आदि को निर्माण करायो। के बढ़ती जनसंख्या कारण उचित नहीं? कठ ही समाज की सेवा क निमित खोला हुआ इ संसाधनों न निर्धन भाइयों की पहुंच से रोक तो नहीं रहया?

४. के शादी विवाह मं फैल रहया आडम्बर कुरितियों के उन्मुलन हेतु म्ह लोग कृत संकल्पित हाँ?

५. आज कल के भौतिकवादी, टी.वी. चैनल देखकर तथा आपण घर का संस्कार रहित टावराँ में विवोहपरांत सम्बन्ध विच्छेद के समय आपस में वैठकर निर्णय न लेकर कोर्ट जाकर प्रताड़ना को विषय बनानो।

अपनों को ही डूबोने आ जाते हैं लोग

– बालकृष्ण गोयल

घर से निकला तो धुआँ हवन का,
आग समझ बुझाने आ जाते हैं लोग।
धर्मशाला में तो हो रहा था शादी का कोलाहल,
लड़ई समझ मंदिर और मस्जिद से समझाने आ जाते हैं लोग।
मय खाना तो मजहब नहीं सिखाता,
फिर भी मजहब सिखलाने आ जाते हैं लोग।
शमशान घाट तो किसी की धरोहर नहीं,
फिर भी रौब जमाने आ जाते हैं लोग।
लाश को भी खुला छोड़ दिया जाए,
वहाँ भी कफन उतारने आ जाते हैं लोग।
अपने बच्चों का तो ठिकाना नहीं,
औरों के बच्चे को समझाने आ जाते हैं लोग।
अपनों से ही ठगे जाने पर,
झूठी सांत्वना देने आ जाते हैं लोग।
कस्ती किनारे लगने से पहले,
अपनों को ही डूबोने आ जाते हैं लोग।
बाप के मरते ही बेटे को,
व्यापार तरीके समझाने आ जाते हैं लोग।

– 7ए, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सरणी,
क्लाईव रो, कोलकाता–700001

कब तक?

– युगल किशोर चौधरी

कल तक जो याचक थे
आज शासक हैं
और आम जनता बेचारी है
ऊपर से लेकर नीचे तक
पनप रहे भ्रष्टाचारी हैं
आम आदमी की भलाई का नारा
गायब हो गया है
रोटी, कपड़ा और मकान के अभाव में
आजादी का अर्थ खो गया है
वातानुकूलित कमरों में बैठकर
गरीबी पर भाषण देने से
गरीबी नहीं मिटती
गरीबी भाषण की चीज नहीं
अनुभव की चीज है
जिसके लिए गांवों की धूल छाननी पड़ती है
गरीबी हटाओं का नारा देकर
हमारे नेतागण कब तक,
गरीबों को मूर्ख बनाते रहेंगे?
कब तक महंगाई और बेकारी की चक्की में
पिसते रहेंगे आमजन
और वे पांच सितारा होटलों में दिल बहलाते रहेंगे?

– चनपटिया, प. चम्पारन, बिहार

सन्त वचन

"गायों को अपने घर में रखना और उनका पालन करना चाहिए। गाय के दूध-घी का सेवन करना चाहिए। भैंस आदि का नहीं। गायों की रक्षा के उद्देश्य से ही गौशालायें बनानी चाहिए, दूध के उद्देश्य से नहीं। जितनी गोचर भूमिया हैं उनकी रक्षा करनी चाहिए तथा सरकार से और गोचर भूमियां छुड़ाई जानी चाहिए। सरकार की गौहत्या नीति का कड़ा विरोध करना चाहिए और वोट उनको देना चाहिए, जो पूरे देश में पूर्ण रूप से गौहत्या बंदी करने का वचन दे।"

– स्वामी रामसुखदासजी महाराज

तलाक/दहेज हत्या (आई.पी.सी. धारा 498/ए)

– राधे श्याम अग्रवाल, अधिवक्ता

प्राचीन हिन्दू ग्रन्थ जैसे मनु स्मृति में ऐसा उद्धृत किया गया है कि भारतीय नारी के लिए उसकी डोली (प्लैनक्वीन) और अर्थी (वायर) उसके पति के घर से निकलती है। अब, यह मानकर चलना होगा कि सामाजिक परिदृश्य बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। इस वैश्वीकरण के युग में सामाजिक आर्थिक ढांचे में काफी तेजी से बदलाव आया है। यह अब सात जन्मों का बंधन अतीत का इतिहास होकर रह गया है।

पहले जमाने में दो परिवारों में जब संबंध होने की बात होती थी वे एक दूसरे के परिवार के संस्कारों, सामाजिक प्रतिष्ठा, रहन-सहन आदि की जानकारी होती थी परन्तु आज लड़के-लड़कियों के बारे में अभिभावकों को कोई जानकारी नहीं होती। आज लड़के-लड़कियों के एक दूसरे के डेटिंग, ई-मेल, कम्प्यूटर, विज्ञापन आदि के द्वारा अपना संबंध बनाने का प्रयास करते हैं जो टिकाउपन नहीं होता है। ऐसा देखा गया है कि लड़कियों के अभिभावक अपना विवेक खो दिये होते हैं। अपनी लड़की की शैक्षणिक योग्यता न होते हुए भी उसके बायोडाटा में उच्च शिक्षा प्राप्त प्रोफेशन लड़के मिल जाने पर उसके समकक्ष कम से कम शिक्षा स्नातक बतलाते हैं जो बाद में मालूम होने पर विस्फोटक हो जाती है। ऐसे लड़कियों के माता-पिता के खिलाफ भारतीय पैनल कोड से संबंधित विभिन्न धाराओं के अन्तर्गत कार्रवाई होनी चाहिए। समाज सोचता है कि लड़कियों की शादी में झूठ तो चलता ही है। अपनी वैसी स्थिति न होने पर भी समाज में अपनी ख्याति प्राप्त करने के लिए उनका मुख्य मुद्दा यह होता है कि लड़की का हाथ किसी प्रकार पीले हो जाय जो सरासर गलत है। हिन्दू धर्म में जिन परिवारों को अपना बना रहे है, जन्म जन्मान्तर का रिश्ता जोड़ रहे हैं उसमें झूठ बोलना हत्या करने के बराबर या हम कहें कि इससे भी अधिक जघन्य अपराध है।

उपर्युक्त कारणों की समीक्षा करने पर यह लगता है कि सामाजिक मूल्यों के बन्धन टूट चुके हैं, लोगों के अन्दर संवेदनशीलता बची ही नहीं हैं। इसलिए उनकी नजर में आदमी की कद्र ही खत्म हो गई है यानि यह सिर्फ दूसरे की नजर में दिखावे के लिए अपनी धर्मपरायणता को छोड़ अपनी सामाजिक पहचान बनाने, फोटो खिंचवाने के चक्कर में जघन्य अपराध करने में भी अपनों को भी पीछे नहीं छोड़ते तथा लड़के एवं उसके परिवार वालों को पूरी तरह तबाह कर देते हैं। वधू पक्ष के लोग दहेज विरोधी कानून की आड़ लेकर अपनी असली करतूतों को छिपा रहे है और वर पक्ष को प्रताड़ित कर रहे हैं। हिन्दू मर्यादाओं को छोड़कर पश्चिमी सभ्यताओं को अपना लिया गया है जिसमें परिवारों में विघटन होते देखे जा रहे हैं। अब यह दिन नहीं रहे जब शादी को कायम रखने के लिए हर प्रयास किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों में सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में यह कहा था कि यदि शादी ऐसे मुकाम पर आ गई हो जिसमें उसे फिर से पटरी पर लाना सम्भव नहीं रह गया हो तो उसे तलाक का आधार मान लेना चाहिए।

आज युवा दम्पतियों की तलाक लेने की संख्या तेजी से बढ़ रही है दिल्ली में पिछले २-३ सालों में तलाक के मामले में बेतहाशा वुद्धि हुई है। इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि दिल्ली की अदालतों में रोजाना औसतन तलाक की ४० अर्जी दाखिल होती है यानि एक सप्ताह में २८० अर्जी। वर्ष २००४ में तलाक की ६५०० अर्जी दाखिल हुई थी। आजकल स्थिति यह भयानक हो गई है कि दहेज प्रताड़ना (धारा ४९८ ए के अन्तर्गत) प्रतिदिन दो हजार से ज्यादा मामले झूठे दाखिल होते हैं। आज की युवा पीढ़ी जीवन भर घुट-घुट कर मानसिक तनाव में जीने से शादी को खत्म करना ही बेहतर समझती है।

ऐसा देखा गया है कि लड़की के अभिभावक आई.पी.सी. की धारा ४९८ए का दुरुपयोग करते हैं। मालीमथ कमिटी ने वर्ष २००३ में ही ४९८ए को गैर जमानती की जगह जमानती एवं इसे कम्पाउण्डेबुल बनाने की सलाह दी थी। साथ ही सुप्रीम कोर्ट भी कई बार चिंता जता चुकी है तथा ३० जुलाई, २०१० को भी धारा ४९८ए को कम्पाउण्डेशन बनाने एवं हिन्दू कानून विवाह में संशोधन की है। विधि आयोग ने भी यह सिफारिश १४ वर्ष पूर्व १९९६ में अपनी १५४वीं रिपोर्ट तथा उसके बाद २००१ में १७७वीं रिपोर्ट में इस अपराध को कम्पाउण्डेबुल की सिफारिश की थी

लेकिन राज्य सभा में मैरेज लॉज (अमेन्डमेन्ट) बिल २०१० लंबित है। जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक इसका दुरुपयोग पति, उसके माता-पिता एवं परिवार के परिजनों को परेशान करने के लिए किया जाता रहेगा। इस कानून के दुरुपयोग की शिकायतें लम्बे समय से आ रही है। दर्ज मामालों में ज्यादातर केश झूठे साबित होते हैं। हाईकोर्ट ने भी कई बार इस तथ्य को स्वीकार किया है। अभी हाल के दिनों में ही एक एन.जी.ओ. (एस. आई.एफ.एफ.) ने एक रिसर्च द्वारा धारा ४९८ए के दुरुपयोग को उपर रिपोर्ट तैयार की थी जिसकी कॉपी लॉ कमीशन ऑफ इंडिया और लॉ एण्ड जस्टिस मिनिस्ट्री को भी भेजी थी।

हर साल निर्दोष सीनियर सिटिजन बच्चों समेत करीब एक लाख आई.पी.सी के धारा ४९८ए के तहत बिना सबूत और जांच के गिरफ्तार किए जाते हैं। कानून के जानकारों का कहना है कि क्रिमीनल जुरीस्प्रुडेन्स का मौलिक सिद्धांत यह कहता है कि कोर्ट द्वारा कानून की नजर में किसी भी आरोपी को यह अधिकार है कि वह तब तक निर्दोष माना जाए जब तक दोषी साबित नहीं हो जाता। धारा ४९८ए में बदलाव लाने हेतु संसद द्वारा संशोधन किये गये थे जिसे महामहिम राष्ट्रपतिजी द्वारा भी हस्ताक्षर हो गये थे परन्तु इसे कुछ वुमेन एक्टीविस्ट द्वारा विरोध किये जाने एवं वकीलों द्वारा हड़ताल किये जाने के कारण इसे नोटिफिकेशन नहीं किया जा सका था।

अब समय आ गया है कि बदलते परिपेक्ष्य में यदि समाज को विघटन से बचाना है तो इसमें जुडिशियरी से जुड़े लोगों विशेष तौर पर जाने माने वकीलों, न्याय विन्दों, महिला अधिकार कार्यकर्ताओं, राष्ट्रीय महिला आयोग, एन.जी.ओ. सभी को इससे होने वाले दुष्परिणामों से लाखों विक्षुब्ध परिवारों को बचाना है। सुरसा की तरह बढ़ते हुए अपराधों की दुनियां में यह अत्यन्त जरूरी हो गया है कि कस्बों, गांवों, शहरों में वकीलों की टीम जायें और उन्हें बतलाये की उनके मौलिक अधिकार एवं कर्तव्य क्या है साथ ही स्कूल कॉलेज के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत भी एक विषय 'सामान्य कानून' शामिल किया जाना चाहिए। इसके दो फायदे होंगे-पहला कोर्ट में बढ़ते केसों की संख्या में भारी कमी आयेगी तथा लाखों पीड़ित परिवारों में अमन-शांति कायम होगी।

लघु कथा :

छेद

एक लड़के को बहुत गुस्सा आता था। एक दिन उसके पिता ने उसे एक कीलों से भरा एक बैग दिया और कहा कि जब भी उसे गुस्सा आए, वह चारदीवारी में पीछे की तरफ एक कील जरूर ठोंक दे। पहले दिन उस लड़के ने ३७ कीलें दीवार में गाड़ दीं।

अगले हफ्ते तक वह अपने गुस्से पर काबू करना सीख चुका था। गड़ने वाली कीलों का क्रम कम हो गया। उसने दीवार में गड़ी कीलों को देखकर सोचा, अपने गुस्से को रोकने का यह सबसे आसान तरीका है। धीरे-धीरे उस लड़के ने अपने गुस्से पर पूरी तरह काबू पा लिया। जब उसने अपने पिता को यह बताया तो उन्होंने उसे सलाह दी कि अब वह हर दिन दीवार से एक कील बाहर निकाले।

जब उसने सारी कीलें निकाल लीं तो वह अपने पिता के पास पहुंचा। उन्होंने लड़के का हाथ पकड़ा और उसे उस दीवार के पास ले गए और बोले 'तुमने बहुत अच्छा काम किया है बेटे। लेकिन उस दीवार के छेदों की तरफ देखो। अब यह दीवार पहले जैसी कभी नहीं हो सकती। इसी तरह से जब तुम गुस्से में कुछ कहते हो तो घाव भी किसी के हृदय में इसी तरह लगता है। तुम कितनी बार भी माफी मांग लो, निशान हमेशा रहता है। गुस्से में कही बात का कोई हर्जाना नहीं होता, इसलिए गुस्से पर काबू रखिये।

– मुकेश अग्रवाल

"अर्थ का अर्थ"

-:: प्रेमलता खंडेलवाल ::-

अर्थ से अनर्थ है
अर्थ बिन अनर्थ है
अर्थ–प्रधान युग में–
अर्थ का ही अर्थ है ।।१।।

अर्थ की अदालत
अर्थ की हुकूमत
अर्थ की इज्जत
अर्थ का ही अर्थ ।।२।।

रिश्तों का अर्थ, अर्थ से
बाप–बेटा– अर्थ से
पति–पत्नि–अर्थ से
जीवन का मूल्य अर्थ से ।।३।।

जीवन रसमय अर्थ से–
गुणी–गुणवान अर्थ से–
मानव–मानव है अर्थ से–
अर्थ बिन सब अनर्थ है ।।४।।

बाल्यकाल–अर्थ से–
जवानी–जवानी अर्थ से
गृहस्थाश्रम–अर्थ से–
मरणोपरांत–संस्कार अर्थ से ।।५।।

अर्थ बिन परोपकार नहीं–
अर्थ बिन वैभव नहीं–
अर्थ बिन यज्ञ नहीं–
अर्थ–बिन पहचान नहीं।।६।।

अर्चना प्रकाशन,
जी.एस. रोड, दिसपुर,
गुवाहाटी–781005

कुछ लोग अँधेरों को सिमटने नहीं देते

-:: जमुना प्रसाद उपाध्याय ::-

दोनों जानिब देख वह स्कूल है यह पेट है
भूख से लड़ना है तो काजो–बटन की ओर देख
क्यों चुभो लेता है उँगली में सुई तू बार–बार
जब रफू हो जाय दामन तब वतन की ओर देख।।

लड़कपन से बुढ़ापे तक यहाँ यौवन नहीं मिलता
मरुस्थल में किसी भी प्यास को सावन नहीं मिलता
सजा रक्खे हैं सब अंधों ने अपने घर पर आईने
मगर हम आँख वालों को यहाँ दर्पन नहीं मिलता।।

सारी नदियाँ कुछ जटाओं में सिमट कर रह गई
योजनाएँ चन्द कदमों से लिपट कर रह गई
मेरे बच्चे प्लास्टिक की थैलियाँ चुनते रहे
नेमतें दो–चार दस कुनबों में बँट कर रह गई।।

कुछ लोग अँधेरों को सिमटने नहीं देते
जुगनू भी मेरे घर में चमकने नहीं देते
हम हैं कि नई पौध लगाने पे तुले हैं
वो हैं कि पौधों को पनपने नहीं देते।।

अगर मंदिर की मूरत बोलने लग जाय तो क्या हो,
तुम्हारी पोल–पट्टी खोलने लग जाय तो क्या हो,
बताओ ब्रह्मवेला में जहाँ तुम पाप धोते हो,
वही गंगा का पानी खौलने लग जाय तो क्या हो।।

ग्राम पो.–पुहँपी, बीकापुर
फैजाबाद–224001 (उ.प्र)

साभार : वागर्थ, मई 2010

बकरी भाग्य विधाता

-:: राकेश रंजन ::-

कहा कसाई ने बकरी से—मैं तुझ पर मरता हूँ
तेरे सुंदर खुर—कमलों पर उर अपना धरता हूँ
पुनः कहा उसने बकरी से—चल, दोनों चलते हैं
दूर कहीं इस क्रूर जगत से, यहाँ प्राण जलते हैं
बात कसाई की सुन बकरी खुशी—खुशी मिमियाई
बोली—मैं भी तेरी खातिर छोड़—छाड़ सब आई
चला कसाई बकरी को ले एक गहन निर्जन में
जहाँ पुकारें घुटकर मरतीं, उसी भयानक वन में
कहा कसाई ने फिर उससे—सुन मेरी दिलजानी
प्यार माँगता त्याग, प्यार का मानी है कुरबानी
प्रेम सत्य है केवल, मिथ्या हैं ये अंजर—पंजर
कहकर वह उसकी गरदन पर लगा चलाने खंजर
बकरी की बोटियाँ बेचकर मदमाता मस्ती में
आ पहुँचा वह पुनः बकरियों की भोली बस्ती में
बोला उनसे—अरी बकरियों, फिरो न मारी—मारी
सुनो एक संदेश सुहावन, बकरीगण—हितकारी
जिस जगती में वधिक न बंधन, क्षमा—दया छाई है
जहाँ अहिंसा परम धर्म है, जीवन सुखदायी है
जिस जगती में हरियाली चहुँ ओर वास करती है
और क्षितिज तक सिर्फ घास ही घास लास करती है
उसी महाजगती का आमंत्रण लेकर मैं आया
नव आशाओं, स्वर्गिक सपनों की सौगातें लाया
यह सुन सभी बकरियाँ गाने लगीं गान मनभाता—
बकरीमन—अधिनायक जय है, बकरीभाग्यविधाता!

आर.एन. कॉलेज से पूर्व, साकेतपुरी,
हाजीपुर (वैशाली)–844101 (बिहार)

मैं मैं हूँ

-:: विजया शर्मा ::-

मैंने शीत से बचने को
सर पर चादर रखी
लोगों ने समझा
लड़की संस्कारी है
मैंने श्रद्धा से सर झुकाया
लोगों ने समझा
आज्ञाकारी है
मैंने धरती को नमन करके नैन झुकाए
लोगों ने समझा
लड़की शर्माती है
मैंने आकाश की तरफ देखा
लोगों ने समझा
आवारा है
मैंने अधिकार के लिए मुँह खोला
लोगों ने समझा उद्दंड है
मैंने प्यार से देखा
लोगों ने समझा व्यभिचारी है
आँखों से आँसू गिरे
लोगों ने समझा बेचारी है
मैंने कलम उठाई
लोगों ने समझा गुनाह है
मैंने अंधेरे से बचने को दिया जलाया
लोगों ने समझा आग है
कहाँ समझा किसी ने
मैं मैं हूँ।

– 1, रुपचन्द्र राय स्ट्रीट,
कोलकाता–700007

उ. प्र. प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दीपावली मिलन व अधिष्ठापन समारोह

उद्योग बढ़ाकर बेरोजगारी भगाये मारवाड़ी समाज

–केन्द्रीय कोयला राज्य मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल

कानपुर। केन्द्रीय कोयला राज्यमंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल ने उद्योग और व्यापार जगत में मुकाम बनाने वाले मारवाड़ी समाज का आह्वान किया है कि वह देश के औद्योगिकीकरण में बढ़कर भूमिका निभाएं ताकि बेरोजगारों के बड़े वर्ग को रोजगार से जोड़ा जा सके। श्री जायसवाल मर्चेन्ट चैम्बर सभागार में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उत्तर प्रदेश ईकाइ के दीपावली मिलन समारोह एवं नयी कमेटी के अधिष्ठापन समारोह को संबोधित कर रहे थे। इसके पहले नयी कमेटी के अध्यक्ष के रूप में राजेश कसेरा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राधा किशन अग्रवाल, उपाध्यक्ष राजकुमार नेवटिया, महामंत्री आकाश गोयनका, मंत्री ध्रुव डालमिया, उप मंत्री आदित्य बरसिया, कोषाध्यक्ष किशन जोशी और प्रचार मंत्री मदन गोपाल तापड़िया की घोषणा की गयी। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सोम गोयनका ने सामाजिक कार्यक्रमों के जरिये अधिकाधिक लोगों को जोड़ने की सलाह दी। नये अध्यक्ष राजेश कसेरा ने शपथ ग्रहण करते हुए प्रदेश ईकाई को नये मुकाम तक ले जाने का भरोसा दिया। बतौर मुख्य अतिथि कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए श्री जायसवाल ने कहा कि भारत में प्रचुरता है लेकिन औद्योगिकीकरण से इसका फायदा उठाया जा सकता है। मारवाड़ी समाज ने उद्योगों को नयी दिशा दी। शहर की पहचान भी बनायी और अब उद्योगों की

संख्या बढ़ाकर मारवाड़ी समाज बेरोजगारी को भी दूर करने में योगदान दे। महामंत्री आकाश गोयनका ने संगठन के बढ़ने का भरोसा दिया। यहां छोटे पर्दे के प्रतिभाशाली कलाकारों, छोटे उस्ताद फेम सिद्धार्थ गोयल, इण्डिया गॉट टैलेण्ड फेम अक्षिता और आकृति कानोड़िया ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों से लुभाया।

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

रंग-रंगीलो राजस्थान महोत्सव का विशाल मेला

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा राजस्थानी संस्कृति को समाज तक पहुँचाने के लिये रंग-रंगीलो राजस्थान महोत्सव का विशाल मेला लगाया था जिसमें राजस्थानी खानपान, राजस्थानी संगीत एवं राजस्थानी लोकनृत्य का भरपूर समावेश किया गया। यहां तक कि मंच का संचालन भी मारवाड़ी भाषा में किया। शहर के सभी गणमान्य नागरिकों ने इसमें शिरकत की। उद्घाटन शहर के नवनिर्वाचित महापौर माननीय प्रभात साइ जी ने किया तथा समापन पर म.प्र. विधान सभा अध्यक्ष ईश्वर दास रोहाणी मुख्य अतिथि रहे। संयोजक कमलेश नाहटा ने मेले को सफल बनाने में सभी को धन्यवाद दिया।

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : तुलसी कुमार दूगड़
कार्यालय का पता :
201, वैष्णो चैम्बर्स
6, ब्रैबोर्न रोड
कोलकाता-700 001
मोबाईल नं.- 098311 67777

नाम : कमल कुमार दुगड़
कार्यालय का पता :
201/504, वैष्णो चेम्बर्स
ब्रेबर्न रोड,
कोलकाता-700 001
मोबाईल नं.- 098300 30522

नाम : विशाल कानोड़िया
कार्यालय का पता :
श्री दुर्गा क्रियेशन्स प्रा. लि.
8, स्टीफन हाउस,
4, बी.बी.डी बाग, कोलकाता-1
मोबाईल नं.- 098300 87510

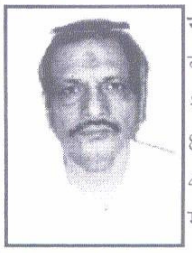

नाम : बनवारीलाल कानोड़िया
कार्यालय का पता :
श्री कृष्णा इण्डस्ट्रीज
8, स्टीफन हाउस,
4, बी.बी.डी. बाग, कोलकाता-1
मोबाईल नं.- 094330 97750

नाम : श्री भगवान कानोड़िया
कार्यालय का पता :
कानोड़िया हाउस
3, मिड्डल रोड, हेस्टिंग्स
कोलकाता-700 022
मोबाईल नं.- 094330 14551

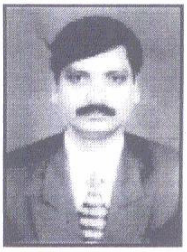

नाम : श्री संजय बंका
कार्यालय का पता :
दात्रे कॉरपोरेशन लिमिटेड
60ए, डी.एच. रोड,
कोलकाता-700063
मोबाईल नं.- 098300 87452

नाम : संजय कुमार जोशी
कार्यालय का पता :
17ए, जदुलाल मल्लिक रोड
कोलकाता-700 006
मोबाईल नं.- 093394 55513

नाम : महेश चन्द्र साह
कार्यालय का पता :
निफा एक्सपोर्ट प्रा. लि.
28/1, शेक्सपीयर सरणी
48, गंगा-जमुना, कोलकाता
मोबाईल नं.- 098312 01001

मारवाड़ी समाज गरीबों को मदद करने के लिए हमेशा आगे - गोपीनाथ मुंडे

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी युवा मंच ने सामाजिक संस्थाओं, उद्यमियों और मेधावी छात्रों का किया सत्कार

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी युवा मंच, महावीर एज्युकेशन सोसाइटी व ललित गांधी फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आज आयोजित कार्यक्रम में भाजपा के नेता गोपीनाथजी मुंडे का सत्कार करते हुए अमीचंद राठोड, साथ में सांसद दिलीप गांधी, प्रदेशाध्यक्ष ललित गांधी, सांस पियुष गोयल, विपक्षी दल के नेता एकनाथ खडसे, विधायक चंद्रकांतदादा पाटील आदि।

कोल्हापुर-मारवाड़ी समाज की सामाजिक भावना जागृत है। इसलिए मारवाड़ी समाज गरीबों को मदद करने के लिए हमेशा आगे है। महाराष्ट्र में रहकर पूरी तरह महाराष्ट्रीयन होके अन्य समाज के साथ वो अच्छी तरह एकसंघ हो गया है। यह विचार भाजपा संसदीय उपनेता, सांसद गोपीनाथ मुंडे ने व्यक्त किया। महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी युवा मंच, महावीर एज्युकेशन सोसाइटी व ललित गांधी फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में मारवाड़ी समाज के १६० मेधावी छात्रों का सत्कार और ११ छात्रों में छात्रवृत्तियां बांटी गई।

समारोह में सांसद एटी नाना पाटील, सांसद हरीभाऊ जावळे, विधायक सुरेश हाळवणकर, विधायक चंद्रकांतदादा पाटील, भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी के महामंत्री शामजी जाजू, जेष्ठ उद्योजक अमीचंद राठोड, लक्ष्मीपूरी मंदीर ट्रस्ट के अध्यक्ष सोनमलजी गांधी, महावीर नगर ट्रस्ट के अध्यक्ष लिलाचंद ओसवाल, गुजरी मंदीर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष हिराचंद ओसवाल, लक्ष्मीनारायण मंदीर ट्रस्ट के अध्यक्ष हरीश जैन, आशापूरण मंदीर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बाबूलालजी ओसवाल, कोल्हापूर के शाखा अध्यक्ष मनोज राठोड़, प्रान्तीय कोषाध्यक्ष प्रदीन जैन, कमलेश ओसवाल, प्रेमचंद जैन, इंदर चौधरी, किरण भंडारी आदि समेत मारवाड़ी समाज के विभिन्न पदाधिकारी उपस्थित थे।

कोल्हापुर मंच के शाखाध्यक्ष मनोज राठोड ने आभार प्रकट किया।

युवक-आह्वान

(१)

भावी भारत के आशास्थल तुम हो युवक वृन्द प्यारे।
मूल–स्तंभ समाज सौध के कुलमणि दीपक उजियारे।
वीर पूर्वजों के संचित धन गौरव के तुम अधिकारी।
उनकी निर्मल यश पताका के तुम अविचल ध्वजधारी।

(२)

दुर्बलता के दुखप्रद द्रुम में आग लगा दो ए वीरों।
जड़ता के अन्तर–तम–गृह मे ज्योति जगा दो ए वीरों।
भयभीतों को निर्भयता का पाठ पढ़ा दो ए वीरों।
निस्तेजों पर तेज किरण की ओप चढ़ा दो ए वीरों।

(३)

आओ वीरों कर्म–भूमि में, नेहरु का जौहर लेकर।
साबरमति के वृद्ध संत का, अद्‌भुत आत्मिक बल लेकर।
महामना सा ऊ चामन ले, देश रत्न का उज्जवल त्याग।
श्री बजाज के जीवन से तुम सीखो मातृ–भूमि–अनुराग।

(४)

करो वीर व्यायाम नित्य हों अंग उमड्‌ग भरे उभरे।
बैठक दंड करो झूले पर झूलो मोद तरंग भरे।
उतर अखाड़े में कुश्ती के दांव–पेंच सीखो सारे।
हाई–लौंग–जम्प में भी तुम सबसे तेज रहो प्यारे।

(५)

लाठी गदा छुरे भालों के खेल विविध–विधि तुम सीखो।
बॉक्सिंग लेजम वारबेल पर हाथ जमाना तुम सीखो।
सूरज नमस्कार कसरत से अंग सुघड़ सुन्दर होगा।
वॉली–वॉल से शक्ति बढ़ेगी,काफी मनरंजन होगा।

(६)

दौड़ लगाने की बाजी में कभी हार कर मत आना।
निरुत्साह के भाव हृदय में युवकों कभी नहीं लाना।
बल वर्द्धन के साधन जितने सबका तुम उपयोग करो।
भरतीय योगासन का भी न्यनाधिक–प्रयोग करो।

(७)

संघ बद्ध हो दुष्टजनों का हृदय कँपाने वाले तुम।
चिर–गौरविनी भारत–भू–की लाज बचाने वाले तुम।
अपने पूर्वज वीरों की कुलकीर्ति बढ़ाने वाले तुम।
मां के पाद–पीठ पर अपना शीश चढ़ाने वाले तुम।

(८)

आओ अपने सिंहनाद से जनपद को जागृत कर दें।
दिल के सूखे अरमानों को फिर से हरा भरा कर दें।
बन्धु तुम्हारे यौवन नभ में वह नव आभा झलक उठे।
परशुरामपुरिया लखलख कर रोम–रोम में पुलक उठे।

साभार–समाज सेवक, 12 अक्टूबर 1941

कूड़ा

–:: नरेन्द्र जैन ::–

कूड़ा सभी फैला रहे हैं
कूड़ा फैल ही रहा
ख़ाली जगहों पर, ख्यालों में
और जेहन में फैलता ही जा रहा यह

गर यही रफ्तार रही
तो ज्यादा देर नहीं लगेगी
दुनिया को कूड़े में बदलने से
ऐसा नहीं कि कोई मजबूरी हो
लोग–बाग शौकिया फैला रहे कूड़ा

कोई अखबार में
कोई किताब में
कोई प्रगतिशीलता में
कोई शिलालेख में
फैला ही रहा है कूड़ा
कूड़े की किस्में भी बेशुमार हैं
धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक
तकनीकी, मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक
और राजनैतिक कूड़े का जिक्र ही क्या किया जाये

गरज ये कि
गुजर बसर करते हम यार
कूड़े के इर्द–गिर्द
अब किससे कहें
कि ''हटाओ बहुत हो चुका
कूड़ों ने जहन्नुम बना रख दी है
ये जिंदगी!''

– 132, श्रीकृष्ण कॉलोनी,
विदिशा–464001 (म.प्र.)

साभार : वागर्थ, मई 2010

नयनों की मनुहार

– धर्मपाल प्रेमराजका

कहती दोनों अखियाँ प्यारी, अब तो मानो बात हमारी।
तुमने देख लिया जग सारा, कितना सुन्दर कितना प्यारा।
अपनी आखें दान करो, ना मुझको और रुलाओ।
मुझको ना तड़पाओ भाई, मुझे ना और जलाओ।

मेरे प्यारे बात सुनो तुम, अपनी आखें दान करो तुम।
वो भी देखे धरा निराली, चप्पे-चप्पे की हरियाली।
कैसे होता इन्द्रधनुष या, कैसे आती नभ में लाली।
अंधियारा जिनकी आखों में उसको दूर भगालो।
मुझको ना तड़पाओ भाई, मुझे ना और जलाओ।।

सोचो जरा अवस्था उनकी, जिनको पड़ता नहीं दिखाई।
जीवन खुशियों से भर दो तुम, यह है सबसे बड़ी कमाई।
चाहे लाख करो तुम पूजा परहित सम है धरम ना दूजा।
देकर बन्द नयन में ज्योति, दुनिया उन्हें दिखाओ।
मुझको ना तड़पाओ भाई, मुझे ना और जलाओ।।

मैं तो हूँ अनमोल इकाई, प्रभु ने तेरे लिये बनाई।
जीवन भर के साथी का अब, क्यों तू बनता है हरजाई।
अन्त समय भी तुम औरों के, मुझसे दीप जलाओ।
जीवन की अन्तिम बेला में, उनका मीत बनाओ।
मुझको ना तड़पाओ भाई, मुझे ना और जलाओ।।

जीवन में तुम करो प्रतिज्ञा, मरने पर दो मुझे विदाई।
इन अखियों से देखों कितनी, खुशियाँ उनके घर में छाई।
जब तुम दान करोगे मेरा, जीवन सफल रहेगा तेरा।
चक्षुदान का दीप 'प्रेम' तुम, घर-घर आज जलाओ।
मुझको ना तड़पओ भाई, मुझे ना और जलाओ।।

– 113, श्री अरविन्द रोड,
सलकिया, हावड़ा–6

मन का सन्तुलन बनाये रखना जीवन की उपयोगिता

* मानसिक स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए अनुकूलता एवं प्रतिकूलताओं में मानसिक सन्तुलन नहीं बिगड़ जाए इसका हमें ध्यान रखना चाहिए।
* हर कार्य को पूरी समझदारी और जिम्मेदारी से किया जावे। उसमें आलस्य-प्रमाद का प्रवेश न होने दिया जाये। इस पर भी सफलता मिले या असफलता का सामना करना पड़े तो भी विचलित होने की मनःस्थिति न बनने पावे।
* मन को हर स्थिति में हलका फुलका रहने दिया जाये। सन्तोष और धैर्य की इतनी मजबूती से पकड़ करनी चाहिए कि छूट न जाये।
* मुस्कान के पास एक वरदान है जो हंसता रहता है, यदि उसको स्वभाव का अंग बना लिया जावे और दृढ़ता पूर्वक उसका अभ्यास कर लिया जावे तो व्यक्तित्व सुन्दर बन जाता है।
* प्रसन्न रहना भी एक कला है। जिसे मुस्कराते रहने की आदत पड़ जाती है, उसके निकट आने वाला किसी फूले-फले महकते वृक्ष की छाया जैसा आनन्द पाता है। स्वभाव की कुटिलता, स्वार्थी, लालची, अहंकारी प्रकृति के व्यक्ति को इच्छित बड़प्पन को सही से पा सकने में सफल नहीं होने देती।

– परमानन्द गोयल

विनोद अग्रवाल सम्मानित

देश के प्रसिद्ध प्रेरक वक्ता C.A. विनोद अग्रवाल (CFO-CMRI Hospitals) को इंडियन ऐचीवियर फोरम नई दिल्ली एवं लायन्स क्लब कोलकाता ने उनकी जन उपयोगी कार्यशालाओं-तनाव से मुक्ति-जिंदगी से दोस्ती, 'सुखमय जीवन के मंत्र', 'बड़ी सोच का जादू', 'सही परवरिश-बच्चे के उज्जवल भविष्य का आधार', 'कर भला होगा भला' के सामाजिक महत्व को समझते हुए उन्हें उद्योग भारती एवं गुरूकुल पुरस्कार से सम्मानित किया। केन्द्रीय श्रम मंत्री श्री हरीश रावत, सुश्री किरण बेदी, सुनील शास्त्री के निर्णायक मंडल ने विनोद की कार्यशालाओं को सभी वर्गों के लिए उपयोगी बतलाया। पुरस्कारों से सम्मानित विनोद ने भविष्य में और बेहतर सामाजिक दायित्वों को निभाने के लिए प्रतिबद्धता जताई।

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

Scholarship upto 100%

Quality education, Affordable Fees
— a corporate social responsibility

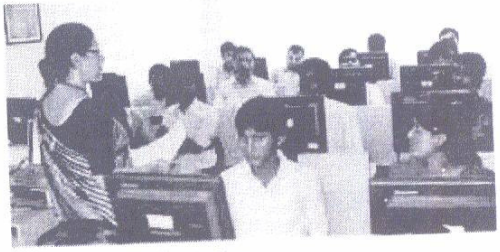

3 Yrs. **BBA** ₹ 75,000

3 Yrs. **BCA** ₹ 75,000

2 Yrs. **MBA + PGPM** ₹ 85,000

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader!**

Master of Business Administration (MBA)
- 2 Year Post-Graduate Course

Bachelor of Business Administration (BBA)
- 3 Year Graduate Course

Bachelor of Computer Application (BCA)
- 3 Year Graduate Course

Complimentary Courses
- Company Secretaryship
- Foreign Languages
- Business English Certificate from British Council
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Administrative Services

ELIGIBILITY & SELECTION

FOR MBA
- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- ★ APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

FOR BBA & BCA
- 10+2 PASSED FROM ANY HIGHER SECONDARY BOARD/COUNCIL

Assistance for placement

Eminent Faculty
Regular / Weekend Classes
AC Classrooms/Hostel

Degree approved by UGC–AICTE–DEC, Ministry of HRD, Govt. of India

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in • Website : www.iisdedu.in

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer

- ***IRON ORE*** *– BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *– BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *– LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA – 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/256761/256661; Fax: 91- 6582-256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

REGD. OFFICE:

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI, KOLKATA – 700 017, INDIA
Phone: 033 - 2281 6580, 22813751; Fax: 91-33- 2281 5380; E-mail: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION:

MAIN ROAD, BARBIL – 758 035, DIST. KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone : (06767) 275221, Telefax : 91- 6767- 276161

SPONGE IRON DIVISION:

ORISSA
MAIN ROAD, BARBIL – 758 035
DIST. KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone : (06767) 276891
Telefax : 91- 6767- 276891

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE, SADAR BAZAR,
CHAIBASA-833201
DIST. SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA
Phone : (06767) 276891/256321 Fax : 91-6582-257521

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28, December 2010
RNI Regd. No. 2868/68

PAILAN GROUP
From KG to PG & Beyond – 1st Time In India

To Dream the Impossible Dream...

PAILAN WORLD SCHOOL

To Reach the Unreachable Star

▼ PWS Students with Nobel Laureate Dr. Amartya Sen

▼ Sunil Gavaskar at PWS for ITF 'Future' Tennis Tournament

▼ Inauguration of PWS Tennis Academy by Sania Mirza

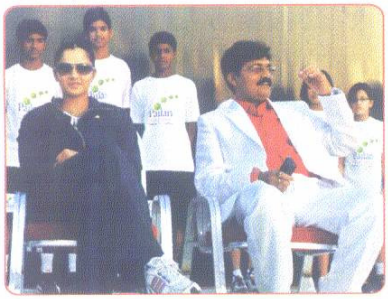

▼ Chairman of the PWS Cricket Academy, Gundappa Vishwanath

That is our Quest, at PWS

Powered by **dual curricula (IGCSE & ICSE)**, with a **extensive 'green' campus** that currently affords, even at peak capacity, **1,000 sq. ft. per child**. We offer facilities that no school in India can match. And we boast a **teacher-student ratio of 1:20**.

We have **tailor-made education delivery programmes** to suit both the students and their parents – **yet another first in India**:

Day Boarding (yes, if you *must* have your child back home everyday): School bus pick-up, breakfast, lunch and high tea in school, including afternoon prep and selected activities. Drop back home.

* **Weekly Boarding (yes, if you are working parents and have quality time for your child only on weekends):** Board in school from Monday to Friday. Weekends at home. Daily routine identical to that of the full boarders.

Full Boarding (*nothing* gets better than this): Board in school. Attend school during the day. School day extended by the provision of evening prep. Busy weekend of activities and Saturday morning classes.

** Weekly Boarding means 85% of Full Boarding privileges at 50% to 58% the cost of Full Boarding.*

PAILAN WORLD SCHOOL ADMISSION NOTICE (KG TO XII, 2011-2012)

Prospectus & Application Forms at *Campus:* Bengal Pailan Park, Joka, Kolkata 700 104, Tel 2497-8605, 2497-8556, 9836911114; and *Pailan Group Corporate Office:* Express Tower, 42A Shakespeare Sarani, Kolkata 700 017, Tel 2283-6920, 9836911119. For further details, check www.pailanworldschool.com or mail frontoffice@pailanworldschool.com or call 9836077551, 9051666229, 9674111555, 9836700722.

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com

वर्तमान सुधारने से भविष्य स्वतः संवर जाएगा - भीमसरिया

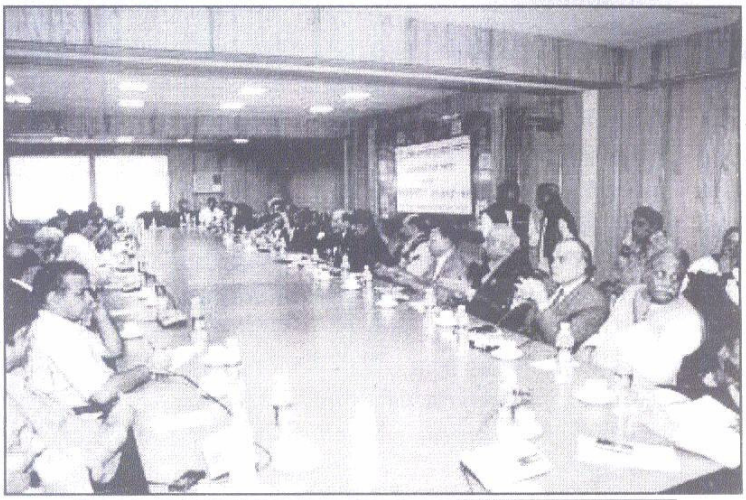

पूरे देश में है मारवाड़ी समाज की पहचान - पत्रकार राजीव हर्ष

(25 दिसंबर) को लोग मौज-मस्ती के मूड में रहते हैं। वहीं, सम्मेलन ने ज्वलंत मुद्दे पर संगोष्ठी का आयोजन कर सहारनीय काम किया है। उन्होंने कहा कि स्वाधीनता आंदोलन में मारवाड़ी समाज के लोगों ने तन-मन-धन से सहयोग दिया था। हमें अपनी उस छवि को कायम रखने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि मारवाड़ियों के बल पर भी भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक दृष्टिकोण से मजबूत हुआ है। उन्होंने कहा कि हमें वर्तमान सुधारने की कोशिश करनी चाहिए, भविष्य स्वतः संवर जाएगा।

श्याम सुंदर बेरीवाल ने भी समाज के लिए नियम बनाने और उसे कड़ाई से लागू कराने पर बल दिया। पत्रकार राजीव हर्ष ने कहा कि मारवाड़ी समाज हमेशा से आधुनिक प्रवृत्तियों को अंगीकार करता रहा है इसीलिए पूरे देश में इस समाज की अपनी पहचान है। आपना कहा कि परम्पराओं का निर्वहन करते हुए रूढ़िवादिता से बचने हेतु परिमार्जन भी करते रहना चाहिए। उन्होंने मारवाड़ी के जुबान, ईमानदारी, नैतिकता, दानशीलता, क्षमता, बहादुरी, चतुराई, भरोसे की चर्चा की। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए नंदलाल रुँगटा ने कहा कि समाज के लोगों में राजनैतिक चेतना का संचार जरूरी है। उन्होंने कहा कि हमें समाज से लेने नहीं, समाज को देने की बात सोचनी चाहिए। कार्यक्रम का संचालन संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री संजय हरलालका ने किया और धन्यवाद दिया राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया ने। सम्मेलन की ओर से राजीव हर्ष, सावरमल भीमसरिया, शोभा सादानी व जुगलकिशोर जैथलिया को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस मौके पर गौरी शंकर अग्रवाल, प्रकाश पारख, पुरुषोत्तम शर्मा, बृजमोहन बेरीवाल, कैलाशपति तोदी, जयकुमार रुसवा, ओमप्रकाश लड़िया आदि ने भी अपने सुझाव दिये। स्वरुचि भोज के साथ संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

लोकसभाध्यक्ष मीरा कुमार से मिला अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन का प्रतिनिधिमण्डल

कोलकाता, 24 दिसम्बर। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के एक प्रतिनिधिमण्डल ने शनिवार, 24 दिसम्बर 2010 को राजभवन में लोकसभाध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार से मुलाकात कर उन्हें बिहार की राजधानी पटना में आगामी 30 जनवरी 2011 को आयोजित 22वें राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन करने हेतु अनुरोध किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा ने लोकसभाध्यक्ष को सम्मेलन के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि हाल ही में राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती समारोह में पधारकर समाज को गौरवान्वित किया था। इसके पहले स्वर्ण जयंती के मौके पर पूर्व राष्ट्रपति स्व. ज्ञानी जैल सिंह, एवं हीरक जयंती को मौके पर पूर्व राष्ट्रपति स्व. शंकरदयाल शर्मा पधारे थे। सम्मेलन के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए अध्यक्ष ने बताया कि समाज सुधार, समरसता, राष्ट्रीय प्रगति सम्मेलन के मुख्य उद्देश्यों में हैं और इन्हीं उद्देश्यों के साथ सम्मेलन देश के 13 प्रांतों में कार्य कर रहा है।

प्रतिनिधिमण्डल में राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री संजय हरलालका शामिल थे। इस मौके पर उन्हें सम्मेलन साहित्य तथा सम्मेलन के मुखपत्र समाज विकास की पुस्तकें भी भेंट की गईं। श्रीमती मीरा कुमार ने एकाग्रता के साथ सम्मेलन के विषय में जानकारी ली। उन्होंने बताया कि वे अपने कार्यक्रम की सूची देखकर शीघ्र इस सम्बन्ध में सूचित करेंगी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व संयुक्त महामंत्री अरुण गुप्ता का निधन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व संयुक्त महामंत्री एवं वर्तमान राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य अरुण गुप्ता का गत रविवार, 26 दिसम्बर को कोलकाता में निधन हो गया। आप काफी वर्षों से समाज व सम्मेलन से जुड़े थे। लायन्स क्लब के गर्वनर रह चुके श्री गुप्ता राजनीति में भी काफी सक्रिय थे और भाजपा के सक्रिय नेताओं में शामिल थे।

मूल रूप से राजस्थान के चौमू जिले के निवासी श्री गुप्ता का जन्म 28 अगस्त 1941 को हुआ था। श्री गुप्ता के निधन से समाज व सम्मेलन की काफी क्षति हुई है। सम्मेलन उनके निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करता है।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक

शनिवार, 11 दिसम्बर 2010 की संक्षिप्त रिपोर्ट

नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया का स्वागत करते राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा, पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार के साथ हैं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री ओम प्रकाश पोद्दार व संजय हरलालका, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य जुगल किशोर जैथलिया, नन्दलाल सिंहानिया, संतोष सराफ, नवल जोशी, नारायण जैन, अतुल चूड़ीवाल, संतोष अग्रवाल, बंशीलाल बाहेती व कैलाशपति तोदी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वर्तमान सत्र की अंतिम राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक शनिवार, 11.12.2010 को कलकत्ता चैम्बर ऑफ कामर्स, 18एच, पार्क स्ट्रीट, कोलकाता में सम्पन्न हुई। सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने बैठक की अध्यक्षता की।

सभापति ने सम्मेलन के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया सहित उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। अध्यक्ष श्री रुँगटा ने बताया कि नागपुर में महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में अखिल भारतीय सम्मेलन की बैठक सफलता के साथ सम्पन्न हुई जहाँ सर्वसम्मति से श्री कानोड़िया अध्यक्ष निर्वाचित हुए। आपने बताया कि सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती समारोह में पधारकर देश की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने अपने सम्बोधन से समाज को गौरवान्वित किया। इस मौके पर उच्च शिक्षा हेतु दो करोड़ रु. का एक कोष स्थापित करने की घोषणा की गई थी। अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि इस कोष हेतु स्वेच्छा से एक करोड़ 40 लाख रुपयों की स्वीकृति हमें प्राप्त हो चुकी है। राजस्थानी भाषा परिचय कोष (श्री केसरी कान्त शर्मा द्वारा लिखित) का प्रकाशन का कार्य श्री रतन शाह एवं श्री जुगल किशोर जैथलिया संभाल रहे हैं। करीब 100 पृष्ठ की इस पुस्तक की 5000 प्रतियां छपाई जायेगी तथा जनवरी 2011 में पटना में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन के मौके पर इसका विमोचन किया जायेगा। आपने बताया कि 29-30 जनवरी 2011 को बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में पटना में 22वां राष्ट्रीय अधिवेशन होगा। 29 जनवरी को विषय निर्वाचनी सभा की बैठक होगी एवं 30 जनवरी को उद्घाटन समारोह एवं खुला सत्र होगा। आपने बताया कि सम्मेलन के संविधान के अनुसार, महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश प्रांत में चुनाव हो गये हैं। तामिलनाडु तथा आंध्र प्रदेश को जल्द चुनाव करवाने हेतु पत्र दिया गया है। श्री रुँगटा ने बताया कि सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार हेतु राजस्थान के रतनगढ़ के निवासी श्री सीताराम महर्षि एवं भंवरमल सिंघी समाजसेवा पुरस्कार हेतु झारखण्ड के रांची के निवासी श्री भागचन्द पोद्दार के नाम तय किये गये हैं। इन्हें पटना में आयोजित अधिवेशन में ये पुरस्कार दिये जायेंगे। बैठक में गत बैठक की कार्यवाई सर्वसम्मति से यथा स्वरूप कार्यवाई पारित की गई। अध्यक्ष ने जनवरी में पटना में आयोजित विषय निर्वाचनी सभा में रखे जाने वाले प्रस्तावों यथा राष्ट्रीय एकता, समाज सुधार, संगठन, राजस्थानी भाषा, आर्थिक नीति की जानकारी दी। जिन्हें सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने गत तीन माह में हुए कार्यों की संक्षिप्त जानकारी दी। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने वर्तमान वित्तीय वर्ष के नवम्बर 2010 तक के आय-व्यय का ब्यौरा रखा।

नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि मैं सम्मेलन की परम्परा को और आगे बढ़ाने का प्रयास करुँगा। आपने कहा कि काम करने वालों से भूल-भ्रांति हो सकती है। ऐसी भूलों की निन्दा न कर सकारात्मक तरीके से उसकी जानकारी दी जानी चाहिए।

अध्यक्ष ने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि वे अधिकाधिक लोगों को सदस्य बनाकर सम्मेलन से जोड़ें। आपने सभी से जनवरी 2011 में पटना में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में उपस्थित होने की अपील की।

राजस्थान की गर्मी पर एक कविता :

पथिक

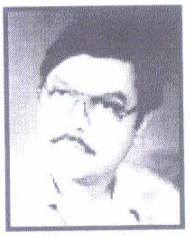

–:: जयकुमार रुसवा ::–

बैठो पथिक जरा सुस्तालो
लथपथ देह पसीने से है
छांट में आओ तनिक हवा लो
बैठो पथिक.....

गाँव गली और खेत–गुवाड़ी
पथ–पगडण्डी तिरछी–झाड़ी
बाधाओं से अनगिन टीले
विविध रकम कंटक नुकीले
श्वेत मिट्टी की सड़क सजीली
ऊबड़–खाबड़ और पथरीली
नाप इन्हें तुम आये बढ़ते
धनी बड़े प्रण के दिख पड़ते
लेकिन क्या रस्ते में गुजरी
हाल जरा कहलो–बतियालो
बैठो पथिक.....

अभी बहुत लम्बा पथ बाकी
तपती बालू रेत बला की
झुलस रहीं हैं दशों दिशाएं
नहीं उचित कि देह जलाएं
अभी नहीं स्वीकारेगा मन
परिभाषा चलना ही जीवन
यह मरुथल है मेरे साथी
तन जलता है प्यास सताती
खुश्क गले में अमृत जैसा
मटकी का ठण्डाजल ढ़ालो
बैठो पथिक.....

वहीं मिलेगा ठौर–ठिकाना
तुमको जहां तलक है जाना
लेकिन क्या जल्दी है भाई
धूप ले रही है अंगड़ाई
लूओं के ये तेज बवण्डर
बहते सांय–सांय का ले स्वर
अपनी कोमल देह टटोलो
रौद्र रुप दिनकर का तोलो
मूल्यवान सीकर के मुक्ता
धूल न हो तुम इन्हें संभालो
बैठो पथिक.....

मैं भी इसी राह का राही
बिल्कुल साथी हूँ तुमसा ही
जो ज्ञानीजन हमें सिखाते
उस पर नहीं चित्त क्यूं लाते
पथ में कोई साथ मिले तो
बातों का कुछ दौर चले तो
हो जाता आसान सफर कुछ
लगती छोटी राह डगर कुछ
कुछ पल पीपल छांव बैठलो
साथ चलूंगा बात न टालो
बैठो पथिक.....

66, पाथुरिया घाट स्ट्रीट,
कोलकाता–700006

चौदह मंत्र

१. दूसरों को दोषी न ठहराएं। न आलोचना करें और न ही शिकायत।
२. सच्ची प्रशंसा करें।
३. दूसरों के भीतर उत्सुक इच्छा जगाइए।
४. मन से दूसरों में रुचि लें।
५. दूसरे व्यक्ति को महत्वपूर्ण होने का अहसास दिलाएं-ऐसा ईमानदारी के साथ करें।
६. दूसरों की राय को भी सम्मान दें। 'आप गलत हैं' ऐसा कभी न कहें।
७. दोस्ताना अंदाज से शुरूआत कीजिए।
८. दूसरे व्यक्ति से तुरंत 'हां' कहलवाएं।
९. दूसरे व्यक्ति को महसूस करवाएं कि संबंधित विचार उसी का है।
१०. अच्छी प्रेरणाओं की तरफ ध्यान दें।
११. लोगों का ध्यान उनकी गलतियों की ओर अप्रत्यक्ष तरीके से खींचें।
१२. दूसरों की आलोचना करने से पहले खुद की गलतियों को देखें।
१३. सीधी आज्ञा देने के बजाय प्रश्न पूछें।
१४. दूसरों को बचने का मौका दें।

– गौरव गर्ग

धरोहर - १

श्री अग्रसेन स्मृति भवन

मंत्री - श्यामलाल जालान

श्री अग्रसेन स्मृति भवन कलाकार स्ट्रीट कलकत्ते का एक प्राचीनतम सेवा प्रधान संस्थान है। इस संस्थान के द्वारा भवन निर्माण की योजना का बीज सनातन धर्मावलम्बी अग्रवाल सभा में 65 वर्ष पूर्व प्रस्फुटित हुआ। अग्रवाल समाज के कर्मठ, धर्मनिष्ठ, निस्पृह समाज सेवियों की सूक्ष्म दूरदर्शिता का प्रतिफल ही है **श्री अग्रसेन स्मृति भवन**। इतिहास साक्षी है - अग्रवाल समाज के आदि प्रवर्तक महाराज श्री अग्रसेन जी द्वारा प्रतिपादित संस्कारों पर आधारित श्री अग्रसेन स्मृति भवन विभिन्न रूप में असंख्य जरूरत मन्दों की सेवा सहायता में सदैव तत्पर है।

अब मैं श्री अग्रसेन स्मृति भवन द्वारा सम्पादित किये जा रहे सेवा कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहा हूं।

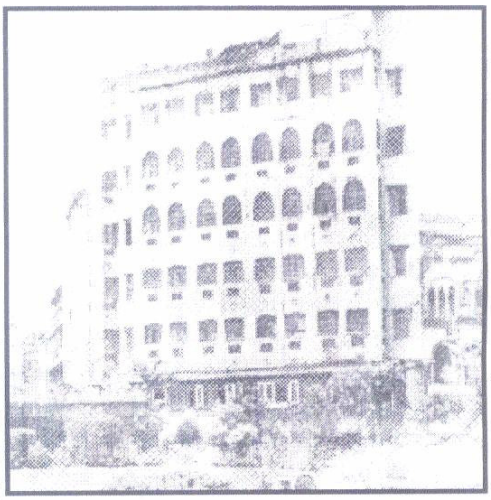

धार्मिक कार्य -

1. श्री श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर :

भवन के आधार कक्ष में कोलकाता महानगरी का विख्यात श्री श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर अवस्थित है।

भगवान श्री लक्ष्मीनारायण जी के युगल स्वरूप के भव्य आदमकद संगमरमर प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा लगभग 55 वर्ष पूर्व ज्येष्ठ शुक्ला 13 संवत् 2010 को शास्त्र-सम्मत विधि से ससमारोह सम्पन्न हुई थी।

प्रतिदिन मंदिर की पूजा-अर्चना श्रद्धापूर्वक विद्वान पुजारियों द्वारा की जाती है। इन वर्षों में श्री लक्ष्मीनारायण भगवान की सेवा, पूजा-अर्चना, भजन, श्रृंगार में भरपूर अभिवृद्धि हुई है तथा मंदिर की प्रतिष्ठा अत्यधिक बढ़ी है। इसी प्रतिष्ठा के फलस्वरूप मंदिर की आय में विभिन्न प्रकार की अभिवृद्धि हुई।

मंदिर की वर्तमान व्यवस्थानुसार कोई भी सज्जन रु. 5100) या रु. 11000) दान कर अपनी तरफ से वर्ष में किसी एक निर्धारित दिन मंदिर में पूजा-अर्चना कराने के पुण्य का लाभ अर्जित कर सकता है।

सेवा विभाग

2. असहाय और अबला सहायता :

आर्थिक रूप से कमजोर अग्रवाल परिवारों को, शारीरिक रूप से असहाय, अबला, परित्यक्ता, विधवा, अशक्त, अपंग, रोगग्रस्त तथा वृद्ध एवं वृद्धाओं को यह सहायता प्रतिमास दी जाती है।

दूध सहायता :

अल्प आय वाले परिवारों के 2 वर्ष तक के बच्चों के लिए प्रतिदिन आधा लीटर दूध का क्रय मूल्य देने की व्यवस्था है।

विवाह सहायता :

अल्प आय वाले **अग्रवाल परिवारों** के कन्या के विवाह पर आंशिक सहायता वस्तु रूप में दी जाती है। भवन में विवाह हेतु स्थान भी उपलब्ध कराया जाता है।

3. चिकित्सा सहायता :

समाज के साधनहीन वर्ग के अग्रवाल परिवारों को भवन द्वारा औषधि एवं चिकित्सा सहायतायें दी जाती हैं।

1. शय्या आरक्षण : स्थानीय अस्पताल श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल तथा मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में भवन की तरफ से प्रत्येक में शय्या का आरक्षण है, जिसमें भवन द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा के लिए रोगी भेजे जाते हैं। सीकर राजस्थान में T.B. तथा होमियोपैथी नि:शुल्क चिकित्सा की व्यवस्था भी भवन द्वारा आरक्षित है।

2. औषधि तथा रोग परीक्षण में सहयोग : अल्पकालिक चिकित्सा के लिए डाक्टर के प्रिस्क्रिप्सन पर खरीदी हुई औषधियों का आधा मूल्य तथा रोग परीक्षण के लिए भी भवन द्वारा अग्रवाल रोगियों को सहायता दी जाती है।

3. होमियोपैथिक चिकित्सा : भवन के सभागार में अवस्थित होमियोपैथिक विभाग श्री कल्याण आरोग्य सदन के माध्यम से कार्यरत है। इसमें प्राय: 300 रोगियों की नि:शुल्क होमियोपैथिक चिकित्सा योग्य डाक्टरों द्वारा प्रतिदिन सुबह एवं सायं की जाती है। इस विभाग के लिए स्थान, बिजली आदि की व्यवस्था भवन द्वारा उपलब्ध करायी गयी है तथा अर्थ सहयोग भी दिया जाता है।

4. शिक्षा सहायता :

स्कूल फीस : यह सहायता अग्रवाल समाज के 12वीं कक्षा तक के छात्र-छात्राओं को दी जाती है।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण : विगत 23 वर्षों से विभिन्न वर्गों के युवक-युवतियों को कम्प्यूटर सम्बन्धी शिक्षा प्रदान की जा रही है।

नवीनतम उपकरणों के साथ LAN के माध्यम से Data Entry Fundamentals of Computer operation (Including windows and Internet), M.S. Office,

Multimedia तथा Computer Language की शिक्षा दी जाती है। यहां से प्रशिक्षण प्राप्त अनेक छात्र-छात्राएं अन्य स्वावलम्बी जीवन बिता रहे हैं।

5. पुस्तकालय :

भवन द्वारा संचालित श्री रामरक्षपाल झुनझुनवाला स्मृति पुस्तकालय आज 5 दशकों से समाज के लोगों की सेवा में संलग्न है। पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की 13000 से अधिक पुस्तकें हैं।

पुस्तकालय के अन्तर्गत वाणिज्य विद्या के उच्च माध्यमिक स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों तथा C.A./C.S./ B.B.A./M.B.A. के छात्रों को Test Books तथा Referene Books पुस्तकालय के बाहर ले जाकर अध्ययन करने की सुविधा है।

6. अग्रवाल मेधावी छात्र-छात्रा प्रोत्साहन पुरस्कार :

प्रतिवर्ष अग्रसेन जयन्ती के सुअवसर पर माध्यमिक परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले अग्रवाल 3 छात्र व 3 छात्रा को स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

माध्यमिक परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले अग्रवाल 11 छात्र एवं 11 छात्राओं को दो स्वर्ण पदक व 20 रजत पदक प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण में विशेष योग्यता प्राप्त 3 छात्र-छात्रा को रजत पदक प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

महिला हस्त शिल्प प्रशिक्षण में विशेष योग्यता प्राप्त 60 महिला, छात्राओं को सरस्वती पूजा के अवसर पर रजत पदक प्रदान कर प्रोत्साहित किया जाता है।

7. महिला हस्त शिल्प प्रशिक्षण :

छात्राओं की रूचि के अनुरूप कशीदाकारी (Embroidery) चित्रांकन एवं रंग सज्जा (Painting) मोती एवं चीड़ शिल्प (Pearl and Bead Craft) कपड़े के खिलौने (Soft Toys) मेहंदी एवं रंगोली तथा सजावट (Packing) आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। विभिन्न विधाओं में अनेक प्रकार की कला कृतियां सिखाई जाती हैं। वर्तमान में लगभग 800 छात्रायें प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

प्रतिवर्ष प्रशिक्षणार्थी छात्राओं की एक प्रतियोगिता आयोजित की जाती है जिसमें विशेष श्रेष्ठता प्राप्त करनेवाली छात्राओं को रजत पदक तथा अन्यान्य रूप से पुरस्कृत किया जाता है।

अन्य सेवायें

8. वृद्ध निवास : परिवार की दुर्बल आर्थिक अवस्था, स्थान के अभाव के कारण आज वृद्ध व्यक्तियों का परिवार में रहना एक समस्या बन गया है। बंगाल के वृन्दावन नवद्वीप धाम में पवित्र पावनी भागीरथी नदी के सुरम्य तट पर रामचन्द्रपुर भजनाश्र के प्रांगण में एक दो मंजिले मकान में श्री अग्रसेन स्मृति भवन ने अग्रवालों के लिए श्री अग्रसेन वृद्ध निवास की स्थापना की है। इस वृद्ध निवास में पूर्ण रूप से सुसज्जित 13 कमरे हैं, जिनमें 26 व्यक्तियों के रहने की व्यवस्था है। दोनों समय शुद्ध शाकाहारी भोजन, सुबह एवं सायं अल्पाहार तथा रात्रि के समय दूध दिया जाता है। स्वास्थ्य रक्षा के लिए होमियोपैथिक चिकित्सक नियमित देखभाल करते हैं। इन सुविधाओं के लिए प्रत्येक व्यक्ति से मात्र रु. 600) मासिक लिया जाता है।

9. वस्तु भण्डार : विवाह आदि तथा अन्य सामाजिक एवं धार्मिक अनुष्ठानों के लिए यहां सब तरह के सामानों की व्यवस्था है।

10. शीतल जल व्यवस्था : राहगीरों के लिये भवन के नीचे कलाकार स्ट्रीट पर मशीनों के द्वारा ठण्डे पानी की 2 प्याऊ चालू है। इससे लाखों लोग अपनी प्यास बुझाते हैं।

भवन के प्रथम तल या सभागार सार्वजनिक सभा आदि में उपयुक्त होता है। प्रात: इसी हॉल में लड़के-लड़की देखने की नि:शुल्क व्यवस्था है। इसी हॉल में प्रतिवर्ष परम्परानुसार श्री अग्रसेन जयन्ती समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। भवन के दूसरे तल में पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण विभाग संचालित है। भवन के दूसरे तल से 7वें तल का उपयोग समाज के लिए शादी विवाह एवं यात्री आवास में होता है।

भवन में समय-समय पर सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानों की व्यवस्था की जाती है। सामाजिक अनुष्ठानों में सन् 1976 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की कार्यकारिणी की और सन् 1983 में अष्टम महाधिवेशन के आयोजन में भवन की प्रमुख भूमिका रही थी। अग्रोहा में कलकत्ता प्रखण्ड के यात्री आवास में भवन से एक कक्ष के निर्माण हेतु रु. 51000) का अनुदान दिया गया था और इस योजना में सहभागी होने के लिए सदस्यों को प्रेरित किया गया था।

दिनांक 24-9-76 को भारत सरकार के डाक विभाग ने महाराज अग्रसेन जी पर डाक टिकट जारी की थी। इस टिकट के विक्रय हेतु भवन द्वारा पोस्ट ऑफिस से एक विक्रय काउण्टर खुलवाया गया था। इस काउण्टर से स्थानीय अग्रवाल बंधुओं ने एक लाख रुपये मूल्य की डाक टिकटें खरीदी थीं।

सन् 1982 का श्री अग्रसेन जयन्ती समारोह भवन के इतिहास में स्मरणीय दिवस है। इस दिन भवन द्वारा कलकत्ते के सम्मानीय तीन महानुभावों को समाज रत्न की उपाधि से अलंकृत किया गया था। सम्मान समारोह के अध्यक्ष स्व. प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका थे तथा तत्कालीन राज्यसभा के उपाध्यक्ष माननीय श्री श्यामलाल यादव ने स्व. लक्ष्मीनिवास बिड़ला, स्व. राधाकृष्ण कानोड़िया और स्व. शुभकरण राजगढ़िया को उपाधिपत्र प्रदान किया था। सन् 1984 में अग्रसेन जयंती पर सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री पुष्करलाल केडिया तथा प्रसिद्ध गो-भक्त स्व. ताराचन्द सराफ का उनके सामाजिक अवदान के सम्मान में अभिनंदन किया गया था। यह परम्परा आज तक चल रही है।

धार्मिक अनुष्ठानों में समय-समय पर श्रीमद्भागवत सप्ताह, कथा प्रवचन का वृहद् रूप में आयोजन किया जाता है। सन् 1985 में पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री निरंजनदेव जी तीर्थ महाराज के चातुर्मास की व्यवस्था भवन द्वारा की गई थी।

भवन द्वारा संचालित कार्यक्रमों की लोकप्रियता को देखते हुए सेवा विस्तार हेतु एक बड़े भवन के निर्माण की आवश्यकता है। स्थान प्राप्त करने हेतु हम प्रयास कर रहे हैं।

धरोहर - २

हरिचरण मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय का संक्षिप्त इतिहास

नमस्ते शारदे देवी सरस्वती मति प्रदे
वसत्वं मम जिह्वाग्रे सर्व विद्या प्रदाभव

आंध्र प्रदेश के उत्तरी निजामाबाद (इन्दूर) नगर में राष्ट्रभाषा हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्रदान करेवाली एकमात्र संस्था आदर्श हिन्दी विद्यालय, राष्ट्रपति मार्ग पर स्थित है। यह संस्था राजस्थानी शिक्षा समिति द्वारा संचालित की जाती है। संस्था, कुल मिलाकर निम्न प्रकार की शिक्षण संस्थाएं संचालित करती हैं-

1) आदर्श हिन्दी विद्यालय, हिन्दी माध्यम, हाई स्कूल
2) आदर्श हिन्दी विद्यालय, अंग्रेजी माध्यम, हाई स्कूल
3) अशरफी देवी अग्रवाल जूनियर कॉलेज
4) आदर्श हिन्दी महाविद्यालय डिग्री कॉलेज

इन शिक्षण संस्थाओं में प्राथमिक से लेकर डिग्री कॉलेज स्तर तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। जिसमें वर्तमान में कुल मिलाकर 2200 विद्यार्थी व लगभग 100 अध्यापक, माँ सरस्वती की उपासना में निरत हैं।

नगर में इस शिक्षण संस्था-आदर्श हिन्दी विद्यालय को हरिचरण मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय के नाम से जाना जाता है। इस विद्यालय का अपना एक संघर्षमय इतिहास है, जिसे विस्तृत रूप से लिपिबद्ध करना यहां संभव नहीं है। अत: कलेवर विस्तार के भय से उसकी संक्षिप्त जानकारी सुबुद्ध पाठकों हेतु यहाँ प्रस्तुत है।

वस्तुत: युवा शक्ति को अणु शक्ति से कहीं बलवान कहा जाता है। यदि इस शक्ति का सदुपयोग किया जावे तो समाज व देश में सम्पूर्ण क्रान्ति लाई जा सकती है। बात उस समय की है जब तत्कालीन हैदराबाद राज्य में राष्ट्रभाषा हिन्दी का नाम लेना भी द्रोह माना जाता था। किंतु ऐसी विषम परिस्थिति में भी राजस्थानी समाज के तत्कालीन नवयुवक बन्धु, कठिनतम परिस्थितियों का सामना करते हुए भी नगर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से एक विद्यालय की स्थापना के लिए तत्पर थे। परिणामस्वरूप वसन्त पंचमी सन् 1943 को, केवल पाँच विद्यार्थियों को लेकर राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से विद्यालय की स्थापना की गई।

प्रारंभिक काल में ही दिन प्रति दिन विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या के दृष्टिगत, विद्यालय को गौशाला भवन से भजन लाल गिरनी, गुरबाआबादी मार्ग पर स्थानान्तरित किया गया। उन दिनों विद्यालय का किराया व स्व. श्री बृजभूषणजी (तत्कालीन प्रधानाध्यापक) एवं अन्य अध्यापकों का वेतन, दानवीर स्व. सेठ हरिचरणजी अग्रवाल, गुप्तदान स्वरूप दिया करते थे। क्योंकि उन दिनों विद्यालय को सरकारी अनुदान प्राप्त नहीं था। अत: इन सभी भारी-भरकम व्यय को उस समय के समाज सेवी व शिक्षा प्रेमी दानदाता ही वहन करते थे।

निरन्तर बढ़ती हुई विद्यार्थियों की संख्या ने एक बार पुन: स्थानाभाव की समस्या खड़ी कर दी। इन्हीं दिनों विद्यालय के लिए निजी भवन की विचारधारा धीरे-धीरे पनप रही थी। परिणामस्वरूप समाज के तत्कालीन गणमान्य शिक्षा प्रेमियों ने विद्यालय के लिए निजी भवन उपलब्ध कराने हेतु अपनी सक्रियता दिखाई व स्व. श्री गोवर्धनलाल जाजू, श्री मनसाराम गुप्ता, स्व. श्री मुरलीधर अट्टल एवं प्रधानाध्यापक स्व. श्री बृज भूषण आदि सज्जनों की सत् प्रेरणा से विद्यालय के लिए भवन, दान स्वरूप देने की घोषणा, बसन्त पंचमी संवत् 2005 को दानवीर स्व. सेठ श्री हरिचरणजी अग्रवाल ने की। इस प्रकार विद्यालय के लिए भवन की समस्या हल हुई। आज राष्ट्रपति मार्ग पर स्थित इस भवन को भव्य रूप प्रदान करने के लिए राजस्थानी समाज के दान वीरों की दान राशि से भवन निर्माण का पुनर्निर्माण किया गया। इसमें वर्तमान में आदर्श हिन्दी विद्यालय हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम तथा जूनियर कॉलेज की तीन शिक्षण संस्थायें चलती हैं। संस्था द्वारा संचालित डिग्री कॉलेज गुरबाआबादी मार्ग स्थित मारवाड़ी पंचायत भवन में चलता है।

वर्तमान में उपरोक्त शिक्षण संस्थाओं को आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा वार्षिक अनुदान के रूप में लगभग 65 लाख रुपये वेतन भुगतान हेतु प्राप्त होते हैं। अन्य सारे खर्चों की व्यवस्था राजस्थानी शिक्षा समिति को करनी पड़ती है।

संस्था ने **विद्या स्मृत मश्नुते**- विद्या से अमृत की, देवत्व की व अमर जीवन की प्राप्ति होती है। इस ध्येय वाक्य को अपनी सर्वांगीण प्रगति का प्रतीक बनाया। यहाँ से निकलने वाले सभी विद्यार्थी, इसके कण-कण को श्रद्धा एवं भक्ति से भावभीनी वन्दना करते हैं। यहाँ से स्नातक स्तर तक की शिक्षा ग्रहण कर विद्या, संस्था एवं संस्कृति की त्रिवेणी में सुयोग्य स्नातक बनकर इस संस्था से मानो आदर्श जीवन की दीक्षा लेकर अपने जीवन के प्रांगण में महती सफलता के साथ प्रवेश करते हैं। इसकी अपनी अनेक विशेषताएं हैं। कलेवर विस्तार के भय से उन सभी विशेषताओं का वर्णन न कर केवल उसकी कुछ विशेषताओं का उल्लेख यहाँ किया जाता है।

1. इस संस्थान ने जाति, वर्ण, कुल, सम्प्रदाय, वर्ग, धर्म, प्रान्त आदि भेद को स्वीकार नहीं किया जिसमें सारा मानव समाज समान रूप से यहां विकसित होने के सुअवसर से उपकृत हुआ है।

2. इस संस्थान ने विद्या के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के विशेष संस्कार समाज को दिये हैं।

3. विद्यालय की तीसरी विशेषता इसका राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति अनुराग व हिन्दी द्वारा शिक्षा प्रदान करना है क्योंकि

भारत माता का हृदय हिन्दी में स्पन्दित होता है।

4. इसकी चौथी विशेषता इसकी राष्ट्रीयता की भावना है।

5. इस संस्था की पाँचवी व सर्वश्रेष्ठ विशेषता है- इसकी सदैव मानवता, सदाचार व सेवा भाव में अखण्ड आस्था।

6. 21वीं सदी में प्रवेश करने के पूर्व ही संस्था ने अपनी विशेषताओं में कम्प्यूटर युग के अनुरूप अपने विद्यार्थियों को ढालने का मन-सा बना लिया था। सो यहाँ संस्था की छठवीं विशेषता बन गई। वर्तमान में संस्था के अध्यक्ष दामोदरलाल जोशी, उपाध्यक्ष सीताराम पाण्डे, मंत्री शंकरलाल अग्रवाल, उप मंत्री अनिल काबरा व कोषाध्यक्ष श्रीराम जाजू हैं।

उपरोक्त जानकारी संस्था के पूर्व मंत्री ओमनारायण अट्टाल ने दी है।

धरोहर - ३

सनेहीराम डूंगरमल लोहिया परिवार के प्रमुख सार्वजनिक कार्यों की सूची

शिक्षण संस्थान, तिनसुकिया में :

1. सनेहीराम हायर सेकेण्डरी स्कूल
सन् 1931 में भूमि दान व भवन निर्माण

2. श्री कन्या पाठशाला
भूमि दान सहित भवन निर्माण

3. बर्डिंग बड्स स्कूल
भूमि दान सहित भवन निर्माण

4. जी.एस. लोहिया गर्ल्स कॉलेज
भूमि दान सहित भवन निर्माण

5. तिनसुकिया कॉलेज
परिसर में मुरलीधर लोहिया विज्ञान भवन प्रकोष्ठ निर्माण

6. आदर्श प्राथमिक विद्यालय, तुलसीराम रोड
भवन निर्माण

7. हिन्दी-इंग्लिश हाई स्कूल
भवन निर्माण में अंशदान

8. दुर्गादत्त लोहिया माध्यमिक विद्यालय, भीमपाड़ा
भूमि दान सहित भवन निर्माण

9. मेघला हाई स्कूल
भवन निर्माण

धार्मिक कार्य, तिनसुकिया में:

1. श्री राणी सती मंदिर
भूमि दान तथा भवन निर्माण में अंशदान

2. श्री शनि मंदिर
भूमिदान

3. शिव मंदिर तथा हनुमान मंदिर, तिनकोनिया

4. शिव मंदिर, शंकर चाय बागान

5. शिव मंदिर, माउड चाय बागान

6. हनुमान मंदिर, शिव मंदिर एवं कुंड

7. शिव शक्ति मंदिर
भूमि दान तथा देवी दुर्गाजी की प्रतिमा की स्थापना

सार्वजनिक निर्माण, तिनसुकिया में :

1. श्री मारवाड़ी पंचायती धर्मशाला
भूमि दान तथा भवन निर्माण में अंशदान

2. सर्वानन्दा सिंह स्टेडियम
तोरण द्वार का निर्माण

3. केन्द्रीय रंगालि बिहू समिति
भूमिदान

4. पूर्वांचल सेवा समिति
भूमिदान तथा डिसपेंसरी निर्माण

5. कच्चुजान गाँव नामघर
भूमिदान

6. ब्रह्माकुमार ईश्वरीय विद्यालय
भूमिदान

7. चुन्नीलाल लोहिया डेली बाजार
भूमि अधिग्रहण

8. सिविल हॉस्पिटल
भूमिदान

9. सरोवर निर्माण
बरदोलौई नगर में

विविध :

1. श्री मारवाड़ी संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी
भवन निर्माण तथा संचालन

2. श्री निष्काम अन्न क्षेत्र, वाराणसी
प्रत्येक वर्ष दरिद्र नारायण भोजन

3. श्री ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम, रतनगढ़
रतनगढ़ की अन्य कई संस्थाओं में नियमित आर्थिक अनुदान

4. शंकर नेत्रालय, बेलतला गुवाहाटी
पेयजल की सुविधा

5. श्री दुर्गा मंदिर, डिब्रूगढ़
मंदिर में स्थापित माँ दुर्गा की अष्टधातु की प्रतिमा को 1920-21 में सेठ सनेहीरामजी लोहिया ने स्वयं लाकर मंदिर के तत्कालीन पुजारी लक्ष्मीनारायणजी गुरूजी को प्रदान की। उल्लेखनीय है कि इस मूर्ति का वजन उन दिनों के हिसाब से 9 मन, अर्थात् करीबन 60 किलोग्राम है। सम्भवत: अपर असम में माँ दुर्गा की यह सबसे अधिक वजन की प्रतिमा है।

6. कामाख्या धाम, गुवाहाटी
परिसर में पेय जल (वाटर कुलर) स्थापना

7. बड़ागोला परिसर में निजी पुस्तकालय

सन्मार्ग सम्मान समारोह

चीन में आयोजित एशियन खेलों में कोलकाता के स्नूकर खिलाड़ी बृजेश दम्मानी ने रजत पदक प्राप्त कर देश के साथ दी समाज का नाम गौरवान्वित किया। कोलकाता से प्रकाशित हिन्दी दैनिक सन्मार्ग द्वारा हिन्दुस्तान क्लब में उनका सम्मान किया गया। इस अवसर बृजेश को पुष्प गुच्छ भेंट करते प्रख्यात फुलबालर पी.के. बनर्जी, साथ में हैं तीरंदाज डोला बनर्जी, रुचिका गुप्त व सन्मार्ग के प्रबन्ध निदेशक विवेक गुप्त।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से बृजेश दम्मानी का सम्मान करते राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार।

समारोह में उपस्थित सीताराम शर्मा, प्रह्लादराय अग्रवाल, रतन शाह, पार्षद मीनादेवी पुरोहित, आत्माराम सोंथलिया, नारायण जैन।

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images
PVT. LTD.
Wonder Images is a ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
Front-lit-flex
Back-lit-flex
Woven P/E
Self Adhesive vinyl
Building wrap
One way vision
Vehicle / fleet graphics
Floor and wall graphics
Reflective Signage
Frosted vinyl
Canvas
Translite
Photo realistic poster paper
Mesh, Tyek,Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of-the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033 2329 8891-92

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

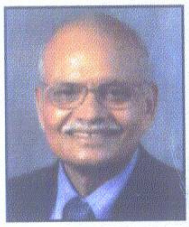

संरक्षक सदस्य संख्या– १३८
नाम: श्रेई फाउन्डेशन
प्रतिनिधि: श्री हरि प्रसाद कानोड़िया
कार्यालय का पता:
श्री गणेश सेंटर, ए.जी.सी. बोस रोड
कोलकाता–७०००१७
दूरभाष: ०३३–२२८३०३६२
फैक्स: ०३३–२२९००२८०
मोबाईल: ९८३००४७९७७
ई मेल:harikanoria@bharatconnect.com
३२ Q, न्यू रोड, अलीपुर, कोलकाता – ७०००२७

संरक्षक सदस्य संख्या– १३९
नाम: सृष्टि इन्फ्रास्ट्रक्चर डेबलपमेन्ट कॉरपोरेशन लि.
प्रतिनिधि: श्री सुजीत कानोड़िया
कार्यालय का पता:
प्लॉट नं. X-१,२ एंड ३
ब्लॉक इपी, सेक्टर–V साल्ट लेक सिटी,
कोलकाता–९१
दूरभाष: ०३३–४०२०२०२०
फैक्स: ०३३–४०२०२०९९
ई मेल: sujitkanoria@shristicorp.com
निवास का पता
३२ Q, न्यू रोड, अलीपुर, कोलकाता–७०००२७

संरक्षक सदस्य संख्या– १४०
नाम: जी.एल. इनवेस्टमेंट (प्रा) लि.
प्रतिनिधि: श्री पी.डी. तुलस्यान
कार्यालय का पता:
५ए, रॉबिन्सन स्ट्रीट
कोलकाता–७०००१७
दूरभाष: ०३३–२२९०६७१७
मोबाईल: ९८३१०७५६४५
निवास का पता:
२९, बालीगंज पार्क, नवीन अपार्टमेन्ट
कोलकाता – १९

संरक्षक सदस्य संख्या– १४१
नाम: शुभम फार्माकेम (प्रा.) लि.
प्रतिनिधि: श्री मनीष कुमार जाजोदिया
२०७, लक्ष्मी प्लाजा, लक्ष्मी इंडस इस्टेट
बिल्डिंग नं.–९, न्यू लिंक रोड
अन्धेरी (वेस्ट), मुबई–४०००५३
दूरभाष:०२२–२६३४४६०८/०९/१०
फैक्स:०२२–२६३१८८०८
मोबाईल:०९८३००२१७१०
ई मेल: shubham@shubham.co.in

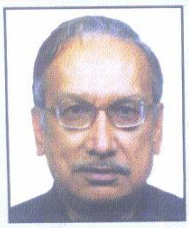

संरक्षक सदस्य संख्या– १४२
नाम: मीनाक्षी इंडिया लिमिटेड
प्रतिनिधि: श्री श्याम सुन्दर गोयनका
कार्यालय का पता:
नं.१६, व्हाईट्स रोड, रोया पीट्टन
चेन्नई–६०००१४
दूरभाष: ०४४–२८५२४६२८/२९
फैक्स:०४४–२८५२३८७०
मोबाईल: ९८४००२२९७०
ई मेल: milgps@gmail.com
निवास का पता:
९–ए, वीनस कॉलोनी, २ स्ट्रीट, अलवरपेट
चैनई–६०००१८

संरक्षक सदस्य संख्या– १४३
नाम: हिमालया पेपर कं.
प्रतिनिधि: श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल
कार्यालय का पता:
११, बेबर्न रोड, द्रौपदी मेन्सन, दूसरा तल्ला
कोलकाता– ७००००१
दूरभाष:०३३–२२४२२०२३/८२१८
फैक्स:०३३–२२४२६९७२
मोबाईल:९८३००६३५९७
ई मेल: himalayapaper@airtelmail.in

संरक्षक सदस्य संख्या– १४४
मेसर्स- किसवोक इंडस्ट्रीज (प्रा) लि.
प्रतिनिधि: श्री विमल कुमार केजरीवाल
कार्यालय का पता:
११, बेबर्न रोड, प्रथम तल
कोलकाता–७००००१
दूरभाष:०३३–२२४२७९२०/७९२१
फैक्स:०३३–२२४२५४८७
मोबाईल–९८३६५७४४५१
ई मेल: info@kiswok.com
निवास का पता:
२४३एच ब्लाक–जे, न्यू अलीपुर
कोलकाता–७०००५३

संरक्षक सदस्य संख्या– १४५
नाम: रश्मि इस्पात लि.
प्रतिनिधि: श्री राजकुमार पटवारी
कार्यालय का पता:
अशोका हाऊस, ३ए, हेयर स्ट्रीट, चौथा तल
कोलकाता–७००००१
दूरभाष: ०३३–२२४८०६३१
फैक्स:०३३–२२४८०२५०
मोबाईल:९००२०६८६०१
ई मेल: rashmiispat@yahoo.com
निवास का पता:
रघुनाथपुर, पोस्ट– झाड़ग्राम
जिला: पश्चिम मेदिनीपुर
पश्चिम बंगाल